(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 53, अंक 3, सितम्बर, 2017
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

1.नई दिल्ली : भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता रामनाथ कोविंद जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.रमा बहन तथा प्रथम महिला बहन सविता कोविंद को वरदान कार्ड देती हुई ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। **2.नई दिल्ली :** भारत के प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.आशा बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : September, 2017.

1.जगन्नाथपुरी : जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.प्रतिमा बहन। **2.वाराणसी :**जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन। **3.काठमाण्डु :** नेपाल उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता गोपाल पराजुली को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.राज बहन। **4.राजकोट :** कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम भ्राता वजुभाई वाला को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.भारती बहन। **5.राँची :** झारखंड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मू को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.निर्मला बहन। **6.गुवाहाटी :** आसाम के राज्यपाल महामहिम भ्राता बनवारीलाल पुरोहित को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.शीला बहन। **7.कोलकाता :** पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता केशरीनाथ त्रिपाठी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.कानन बहन। **8.रायपुर :** छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम भ्राता बलरामदास टण्डन को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.कमला बहन। **9.गाँधीनगर :** गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता ओ.पी.कोहली को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.सरला बहन। **10.त्रिवेंद्रम :** केरल के राज्यपाल महामहिम जस्टिस सदाशिवम को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.मिन्नी बहन। **11.भुवनेश्वर :** उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम डॉ.एस.सी.जमीर को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.लीना बहन। **12.पुदुचेरी :** पुदुचेरी की राज्यपाल महामहिम डॉ.किरण बेदी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.कविता बहन।

संजय की कलम से

हिन्दी भाषा और आध्यात्मिक मूल्य

हर वर्ष हम 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाते आ रहे हैं। भाषा तो भाव और भावना की अभिव्यक्ति का एक माध्यम अथवा साधन हुआ करती है। हम लोग जैसे हिन्दी को एक उच्च भाषा मानते हैं, वैसे ही हमें भावों और भावनाओं की अभिव्यक्ति की रीति भी उच्च ही अपनानी चाहिए। भाषा के ऊँचा होने का प्रमाण तो उसका प्रयोग करने वाले लोगों के जीवन की अथवा मानसिक स्थिति एवं व्यवहार की ऊँचाई से मिलना चाहिए।

हिन्दी एक उच्च भाषा है परन्तु हमारा जीवन कितना उच्च है? क्या हिन्दी भाषा अथवा हिन्दी साहित्य के द्वारा हमने अपने संस्कारों का दिव्यीकरण किया? क्या हम प्रेम की भाषा अथवा एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भाषा को सीखे? क्या हमने अपने देश के आध्यात्मिक मूल्यों (Spiritual Values) तथा संस्कृति को, जिसका ही एक अंग यह भाषा है, अपने मन में गौरवमय स्थान दिया? क्या हमारी दृष्टि में भाषा के साथ-साथ चरित्र और अनुशासन का ऊँचा स्थान है?

आज भारतवासियों में आपसी भेदभाव, मनमुटाव क्यों? सोचने पर आप मानेंगे कि इसका एक मात्र कारण यही है कि वे अपने देश के पूर्वकाल के सर्वोत्कृष्ट इतिहास को, अपनी उच्च मर्यादा को, अपने यहाँ के सर्वोत्तम आध्यात्मिक ज्ञान को भूल चुके हैं। उन्हें यह मालूम नहीं कि यह भारत पहले देवालय अथवा शिवालय था। सतयुग और त्रेता युग में इसी भारत में काम-क्रोधादि का नाम-निशान भी न था। यहाँ सदा प्रेम की वीणा बजती थी और लोग सुख के गीत गाते थे। द्वेष, हिंसा, ईर्ष्या, भेद-भाव ने लोगों को कभी स्पर्श ही न किया था। आज भारत के उस स्वर्णिम इतिहास का कहीं उल्लेख या पठन-पाठन ही नहीं रहा और लोग एक परमपिता परमात्मा को भूल चुके हैं, इसी कारण आज एकता नहीं रही। वे एक-दूसरे को आत्मा की दृष्टि से देखने के आदेश को भूल चुके हैं और इस बात को भी विस्मृत कर चुके हैं कि वास्तव में हम सभी आत्माएँ एक ही परमधाम अथवा ब्रह्मलोक रूपी देश से यहाँ आई हैं।

यदि हम देश में एकता चाहते हैं तो हमें चाहिए कि हम सभी को एक परमपिता परमात्मा की लगन में मगन करने का यत्न करें, हम सभी को नर से नारायण या मानव से देवता या तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का लक्ष्य दें। एक ही लक्ष्य, एक ही इष्ट अथवा एक ही स्मृति से एकता आयेगी। ❖

अमृत-सूची

- संकल्पवान और संकल्पहीन *(संपादकीय)* 4
- श्रद्धांजलि.......................6
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के...8
- मूल्य शिक्षा – शिक्षा प्रणाली ..10
- जहाँ चाह, वहाँ राह 13
- आत्महत्या से 14
- बाबा की शक्ति से 15
- सर्वांगीण मेकप 16
- मुझे शिवबाबा पर पूर्ण 18
- मिथक से सत्य की ओर.......19
- विनम्रता मनुष्य का गहना है....21
- दिलवाले ने दिया..............22
- योग द्वारा सशक्त धारणाओं ..23
- खोए हुए रुपये 24
- तकनीक के साथ मूल्यों.......25
- आश्चर्य! जानवर जैसे-से 26
- त्याग व सेवा की मूरत 27
- सचित्र सेवा समाचार 29
- बच्चे करते हैं अनुकरण.......30
- श्रद्धांजलि.................... 31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- मदद का मीठा अनुभव........34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
Website : gyanamrit.bkinfo.in

सम्पादकीय ..

संकल्पवान और संकल्पहीन

किसी ने सत्य कहा है, ''यह दुनिया संकल्पवानों की है, संकल्पहीन तो यूँ ही भूमि का भार बढ़ाया करते हैं।'' जैसे बलवान और बलहीन का अन्तर स्पष्ट है उसी प्रकार संकल्पवान और संकल्पहीन का अन्तर भी स्पष्ट है। किसी भी परिस्थिति में, प्रतिकूलता में भी जो धारण किए हुए श्रेष्ठ संकल्पों को दृढ़ता से पकड़े रहता है, उनको क्रियान्वित करता रहता है, वह है संकल्पवान और जो विपरीत परिस्थितियों के झोंकों में या अलबेलेपन में या लापरवाही में अपने श्रेष्ठ संकल्पों को त्याग देता है, भुला देता है या ढीले कर देता है वह है संकल्पहीन।

संकल्प की दृढ़ता पर जीवन की उन्नति-अवनति निर्भर है। मजबूत संकल्प वाले की मंजिल की ओर गति द्रुत होती है और संकल्प में ढील आने से गति भी लंगड़ाती-लड़खड़ाती नज़र आती है। गति में भय और संशय दृश्यमान होता है, लगता है जैसे कोई जबर्दस्ती घसीटे जा रहा है।

संकल्प को मजबूत कैसे बनाएँ?

प्रश्न यह है कि संकल्प टूट क्यों जाता है, उसे मजबूत बनाने का उपाय क्या है? इसका उत्तर बड़ा सरल है। जो अपने लक्ष्य पर मन को टिकाता नहीं, बार-बार लक्ष्य का स्मरण करता नहीं तो मन को अहसास होने लगता है कि शायद यह लक्ष्य महत्त्वपूर्ण नहीं है और वह कहीं भी खिसक जाता है। दूसरी बात, मन के सामने दो विकल्प हैं, एक तो वह लक्ष्य की ओर जाए और दूसरा, इन्द्रियों के रसों में भटके। यदि इन्द्रियों की ओर भागता है तो शब्द, रस, रूप, स्पर्श के झूठे आकर्षण में फँसकर लक्ष्य को भुला देता है। इन्द्रियों पर नियन्त्रण करके ही लक्ष्योन्मुख हुआ जा सकता है। तीसरी बात है, जो प्रतिकूलताओं को सहन नहीं कर पाता वह भी लक्ष्य से विचलित हो जाता है।

दृढ़ता और जिद्द में अंतर

संकल्पवान का अर्थ है दृढ़ इच्छाशक्ति वाला। दृढ़ता और जिद्द में अंतर है। दृढ़ता सफलता का आधार है और जिद्दी कभी सिद्धी और प्रसिद्धि नहीं पा सकता। जिद्द के पीछे व्यक्ति का पूर्वाग्रह, पुराना संस्कार, स्वार्थ, मैं-पन आदि होता है। वो संस्कार उसे उद्दीप्त करता है और वह परिणामों को नजरअन्दाज करके भी अपनी बात, अपने विचार, अपने दृष्टिकोण को ऊपर रखता है। यदि कोई बाधक बनता है तो वह क्रोध करता है, शत्रुता ठान लेता है। इस प्रकार नकारात्मकता के वशीभूत होता है। इतिहास में कई लोगों की जिद्द के कुपरिणाम दर्ज हैं। मुहम्मद तुगलक ने राजधानी बदलने की जिद्द की जिसके कुपरिणाम कइयों ने झेले। भारत-पाकिस्तान का विभाजन भी जिद्द का ही कुपरिणाम है। कोई शक्ति अर्जित करके जिद्दी हो जाए तो परिणाम अधिक भयंकर हो जाते हैं। जिद्दी की भेंट में दृढ़ता वाला अपने हृदय की पवित्र भावनाओं के सहारे आगे बढ़ता है। किसी के प्रति भी कोई नकारात्मक भाव ना रख वह केवल लक्ष्य को सामने देख चलता जाता है। इस क्रम में कोई बाधक भी बनता है तो भी न तो उसे क्रोध आता, न वो हतोत्साहित होता, न रुकता बल्कि उसके प्रति रहम भाव रखकर, उसे भी साथी और सहयोगी बना लेता है। अतः दृढ़ता की शक्ति से विजय होती है और जिद्द वाला हार खा लेता है।

आजादी के लिए गांधी जी की दृढ़ता

महात्मा गांधी ने कहा है, ''मुट्ठीभर संकल्पवान लोग

जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।'' भारत की आजादी की लड़ाई के दौरान उन्होंने सन् 1942 में 'भारत छोड़ो' आंदोलन चलाया और नारा दिया, 'करो या मरो'। सारा भारत इसमें कूद पड़ा, इस भावना के साथ कि या तो आजादी लेकर छोड़ेंगे या मर मिटेंगे। जेलें भर गईं। जेलों में लोगों को डालने की जगह नहीं बची। जब उन्होंने दांडी यात्रा शुरू की तब भी कितनी दृढ़ता थी! शरीर की आयु बड़ी थी लेकिन चलने में सबसे आगे। इतने तेज़ चलते थे कि पीछे चलने वाले दौड़ते थे। तब भी उनका नारा था, चाहे मैं कुत्ते की मौत मरूँ, चाहे मैं कौए की मौत मरूँ पर नमक कानून भंग करूँगा। गरमी में चले, काँटों पर भी चले, पत्थरों पर भी चले, भूखे-प्यासे भी चले, अकेले भी चले पर दृढ़ता के साथ चले। लोग पेड़ों पर चढ़कर देखते थे। काफिला बड़ा होता था, गांधी जी दिखते नहीं थे। शरीर की कोई सजावट नहीं, भीड़ में घिर जाते थे। ताकत किसमें थी? संकल्प में ताकत थी। उस ताकत ने भारत को आजाद करा दिया। अब हमारे सामने भी एक बहुत बड़ी मंजिल है, पहले हम खुद को तो आजाद करें। हमारी लड़ाई तो अपने आप से है।

एक बार एक किसान के गोदाम में बहुत सारे चूहे घुस गये और अनाज खराब करने लगे। किसान ने लोहे का एक बड़ा पिंजरा बनवाया, उसमें चूहे फँसने लगे। एक दिन एक बहुत मोटा चूहा फँस गया। उसे बड़ा बुरा लगा कि मैं तो बंधन में आ गया। उसने उछल-कूद बहुत मचाई, इससे पिंजरा खिसकने लगा। उसको लगा कि मैं खिसकाते-खिसकाते इसे बाहर ले जा सकता हूँ और सचमुच वो गोदाम से बाहर जंगल में आ गया। उसे बड़ी खुशी हुई कि मैं गोदाम के बंधन से छूट गया। गोदम से तो बाहर आ गया लेकिन पिंजरे में तो अभी भी था। हम सब भी कई गोदामों से तो बाहर आ गये हैं लेकिन पिंजरे में तो अभी भी हैं। वो पिंजरा कौन-सा है? खुद के कमजोर संस्कारों का, स्वभाव का, खुद की आदतों का। गोदाम का बन्धन तो बहुत बड़ा था, दिखता था पर यह पिंजरे का बन्धन सूक्ष्म है, दिखता नहीं। इस पिंजरे से बाहर आने के लिए चाहिए मुक्ति के प्रति दृढ़ संकल्प शक्ति। इसके लिए पहले अपनी चेकिंग करनी है और फिर अपने को बदलना है।

मन पर ध्यान

शिव बाबा ने कहा है, अपने को बदलने के लिए चाहिए अपने मन के ऊपर राज्य। मन फिसलने लगे तो हम इसे रोकें। हम बार-बार देखें कि मन कहाँ गया? मैंने संकल्प क्या किया था, फिर ढीला कैसे हो गया? जैसे गाड़ी चलानी सीखने वाला ध्यान रखता है कि क्या मैं इसे सड़क पर चला रहा हूँ? यह सड़क से नीचे कैसे उतर गई, उसे फिर सड़क पर लायेगा। गाड़ी फिर नीचे घास में, रेत में जायेगी, फिर सड़क पर लायेगा और ऐसे करते-करते वह कुशल हो जायेगा। मन भी ऐसे है, हम इसे मंजिल की ओर ले जाते हैं, यह फिर फिसल जाता है। अत: हमारा अधिकतम ध्यान इस बात पर चाहिए कि मन क्या कर रहा है? कहाँ गया? क्यों गया? मेरा निर्णय ठीक है? मैं संस्कारों के वशीभूत तो नहीं हूँ? मेरे संस्कारों को कुसंग तो नहीं लगा? मेरे मूल संस्कार कौन-से हैं? क्या मेरे मूल संस्कार कर्म में आए या कोई मिलावट हुई?

इन्द्रियों की आदत है, ये एक विषय से दूसरे विषय पर एक पल में खिसक जाती हैं और इनको उकसाता है मन। अगर मन वश में है तो आँख की ताकत नहीं कि वो किसी विषय पर अटके। मन पीछे बैठकर कहता है कि इसे देखते ही रहना, पीछे हटना नहीं, तो आँख को मन का सहयोग मिल जाता है। आत्मा यदि कहती है कि यहाँ से हटो, यह गलत है तो भी आँख मानती नहीं क्योंकि मन आकर्षित है। तो आत्मा पहले मन को हटाये, मन को विश्वास में ले। शिव बाबा कहते हैं, संकल्प को मोड़ो, संकल्प को बचाओ, संकल्प व्यर्थ गया तो सारी शक्ति व्यर्थ चली

जायेगी। जब भी एकांत में बैठो, अपने तीनों अनादि साथियों (मन, बुद्धि, संस्कार) को पुचकारो, उनको प्यार करो, उनका हाल-चाल पूछो, उनकी दिशा की जाँच करो।

संकल्पवान रामतीर्थ

स्वामी विवेकानंद के समकालीन थे स्वामी रामतीर्थ। बहुत गरीब घर के थे। बहुत मेहनत से पढ़ाई पढ़ी थी। रामतीर्थ ने सब प्रकार के कष्टों को सहकर एक तपस्वी की तरह पढ़ाई में इतना अधिक मनोयोग लगाया कि सदा यूनिवर्सिटी में प्रथम आते रहे और जब एम.ए.की परीक्षा देने से कुछ समय पूर्व सरकारी कॉलेज के अंग्रेज प्रिंसिपल ने इनकी सच्ची लगन से प्रसन्न होकर अपने पास बुलाया और पूछा कि ''क्या मैं आपका नाम आई.सी.एस.(भारतीय सिविल सर्विस) की परीक्षा के लिए भेज दूँ'' तो इनकी आँखों में आँसू भर आये और कहने लगे, ''मैंने इतनी मेहनत से ज्ञान का जो खजाना पाया है, उसे बाँटकर अपने आपको और दूसरों को सुखी करना ही मेरा कर्त्तव्य है।'' बाद में वे संन्यासी बन गये। अपने आप को वे आत्मा समझते थे। आत्मभाव का पाठ उन्हें बहुत पक्का था। उस जमाने में सारे ही लोग संन्यासियों की कदर करते हों, ऐसा नहीं था। बहुत लोग विरोध भी करते थे, उल्टा बोलने वाले भी थे। अगर कोई उल्टा बोल देता था, गाली दे देता था, तो घर में आकर अपने आप को कहते थे, आज राम ने बहुत गाली खाई, बहुत मजा आया अर्थात् खुद को साक्षी होकर देखते थे, खुद को आत्मा समझकर बोलते थे कि राम तो यह शरीर है, लोग शरीर को देखकर गाली देते हैं पर मैं तो आत्मा हूँ। ऐसी उनकी धारणा थी। एक बार वो रास्ते से जा रहे थे। जाते-जाते स्वाभाविक नजर पड़ी और देखा कि एक महिला छत पर कपड़े सुखा रही है। वे चलते रहे। थोड़े चले होंगे, उन्होंने पीछे मुड़कर फिर देखा उसी छत की तरफ। जब फिर से मुड़कर देखा तो उन्होंने अपना कान पकड़ा और अपने आप से कहा, ''राम, तुम संन्यासी हो? तुम भगवे कपड़े पहनकर लोगों को धोखा दे रहे हो? एक बार तुम्हारी नजर पड़ी वो तो दोष नहीं लेकिन तुमने पीछे मुड़कर क्यों देखा? यह तुम्हारा दोष है, तुम संन्यासी कहलाने लायक नहीं हो, तुम धोखेबाज हो। इसकी तुमको सजा मिलनी चाहिये, वापिस चलो।'' उसी रास्ते से वे वापिस आये। घर आकर बिना खाये-पीये अपने को कमरे में बंद रखा। अपने को कहा, ''जब तक पूरा प्रायश्चित नहीं होगा, तुमको खाना नहीं मिलेगा, बदलो अपने आप को।'' अपने परिवर्तन के प्रति ऐसे संकल्पवान थे स्वामी रामतीर्थ। हम भी उनसे प्रेरणा लें और संकल्पवान बनें, यही शुभकामना है।

ब्र.कु.आत्मप्रकाश

श्रद्धांजलि

अव्यक्त बापदादा के दिलतख्त पर रहने वाली, अथक सेवाधारी, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई, दादियों के अति समीप, विशेष देहरादून में रहकर हरिद्वार, ऋषिकेष में सन्त-महात्माओं एवं महामण्डलेश्वरों की सेवा के निमित्त बनी हुई, सबकी स्नेही, मीठी प्रेम बहन, आज से 63 वर्ष पूर्व ज्ञान में आई और अपनी बाल अवस्था में ही समर्पित होकर दादियों के साथ सेवाओं में लग गई। बापदादा आपको प्यार से प्रेमपुतली कहकर बुलाते थे। बापदादा की प्रेरणा से ही आप देहरादून, हरिद्वार में सन्तों की विशेष सेवा के निमित्त बनी। आपने दो बार मधुबन महायज्ञ में सन्तों के लिए विशेष सम्मेलन आयोजित करवाये, आप उन्हें बाबा के घर में बहुत स्नेह-प्यार से समय प्रति समय लाती रही। आपके प्रति सभी महामण्डलेश्वरों का भी विशेष आदर था। आप धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा थी। आपने कुछ समय लण्डन में भी अपनी सेवाएँ दी थी। दिनांक 11 जुलाई, 2017 मंगलवार को, आप अपनी 75 वर्ष की आयु पूरी कर सायं 4.30 बजे पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। ऐसी स्नेही आत्मा को पूरा दैवी परिवार स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

‘पत्र’ संपादक के नाम

अप्रैल, 2017 अंक में ‘माँसाहार या शवाहार’ लेख चिंतन-मनन करने योग्य है। इसके द्वारा आसुरी वृत्ति की आत्माओं को झकझोर देने वाला प्रशंसनीय संदेश दिया गया है। यदि ऐसी क्रूरतम आत्माओं में किंचित मात्र मानवता हो तो उनका जीवन परिवर्तन अवश्य ही सम्भव हो जायेगा। यह लेख एक अंक में प्रकाशित नहीं बल्कि प्रत्येक अंक में प्रकाशित करने योग्य है। इस लेख को लिखने एवं प्रकाशित करने के लिए बहुत-बहुत-बहुत बधाई।

ब्रह्माकुमार रतन भाई, सिकन्दराराऊ, उ.प्र.

जून, 2017 के अंक में ‘व्यसनमुक्त जीवन’ यह सुंदर लेख पढ़कर बहुत अच्छा लगा और प्रभावित भी हुआ। लेख में लेखिका ने सीधी, सरल, सुंदर भाषा में, सही ढंग से समझाया है कि शराब जहरीली नागिन है फिर भी लोग नागिन को गले लगाते हैं और अपने जीवन में मौत को दावत देते हैं। लेख में समझदारी, सावधानी, जिम्मेवारी, खबरदारी, जवाबदारी आदि द्वारा व्यसन से बचने के बहुत अच्छे उपाय बताये गए हैं। जो व्यक्ति व्यसनमुक्त होता है, उसका जीवन सफल हो जाता है और व्यसनी नरक की यातना भोगता है।

लालजी भाई गोवेकर, मेहकर (महाराष्ट्र)

जून, 2017 का अंक हस्तगत हुआ। ‘संजय की कलम से’ में नवागन्तुकों व अन्य को भी दिशा दी गई है कि ईश्वरीय ज्ञान, संबंधों को तोड़ने के लिए नहीं कहता, उनके दिव्यीकरण की विधि समझाता है। जानकी दादी के लेख ‘मम्मा की विशेषताएँ’ और ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई के लेख ‘विद्या विशारदा...’ के माध्यम से मम्मा के सन्दर्भ में मर्मस्पर्शी जानकारियाँ मिलीं। ‘आत्म-प्रदर्शन, न कि शरीर-प्रदर्शन’ स्वयं में एक सन्देश है व वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को समेटे हुए है। भाई-बहनों के अनुभव के लेख बताते हैं कि बाबा की याद अंतत: उनका साथ बन जाती है और व्यवहारिक रूप से वहाँ सहयोगी होती है, जहाँ पावनता है। शिवानी दीदी के लेख ‘जाँचें दिन भर की मन की स्थिति’ में आध्यात्मिक शक्ति की श्रीवृद्धि के उपाय सहज ही बता दिये गये। इस अंक के मुख पृष्ठ पर मम्मा का तेजस्वी व ममत्वपूर्ण चित्र संग्रहणीय है।

डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की, उत्तराखंड

जून, 2017 की ज्ञानामृत पत्रिका में ‘आत्म-प्रदर्शन न कि शरीर-प्रदर्शन’ लेख में नारी की दो तरफी – बाहरी और आन्तरिक सुन्दरता, फौलादी ताकत, नकल के साथ अकल, आत्मा रूपी मोती को देखें, आत्म-प्रदर्शन की ओर बढ़ें, नारी या नर के गुण उसकी आत्मा में हैं – ये सब बातें पढ़ीं। लेख बहुत ही मर्मस्पर्शी लगा। नारी जगत को इस लेख के माध्यम से अपना मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। देह और देह के पदार्थों के उग्र प्रदर्शन से बचें। ज्ञान के स्रोत स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा शिव हैं, जो परमसुन्दर हैं। ज्ञान ही आन्तरिक सौन्दर्य को निखारता है।

डॉ.राधेश्याम पवार, खण्डवा (मध्यप्रदेश)

जुलाई, 2017 के अंक में प्रकाशित सम्पादकीय ‘सफलता की कुँजी दृढ़ता’ तथा ‘प्रेम की अभिव्यक्ति’, ‘उमंग-उत्साह सम्पन्न जीवन’, ‘त्याग व सेवा की मूरत माता’ दिल को छू गये। दृढ़ता से जीवन का नवनिर्माण होता है। उमंग-उत्साह से बेशुमार सफलता हासिल होती है। प्रेम देने से प्रेम बढ़ता है। शिवबाबा प्रेम के सागर हैं। ‘त्याग व सेवा की मूरत माता’ यह लेख आज के हर पुत्र को पढ़ना चाहिए। अपनी चमड़ी के जूते बनाकर माँ को पहनायें तो भी कम है, यह हर बच्चा समझे और वृद्धावस्था में माँ का ऋण अदा करने का सौभाग्य प्राप्त करे।

ब्र.कु. घनश्याम भाई सुथार, ओड (आणंद), गुजरात

ऐसा नहीं है कि दुख बढ़ गए हैं बल्कि सच्चाई यह है कि सहनशीलता कम हो गयी है

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

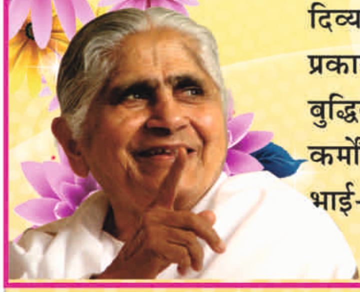

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- एक है योगबल, दूसरा है श्रेष्ठ कर्मों का बल, तो आप श्रेष्ठ कर्मों को थोड़ा स्पष्ट करेंगे?

उत्तर- एक है योगबल, पहले वो अनुभव करो। सबजेक्ट चार हैं – ज्ञान, योग, धारणा, सेवा। सेवा का बल चौथा नम्बर है। ज्ञान-योग का बल पहला नम्बर है। ज्ञान मिला कि तुम आत्मा हो, परमात्मा के बच्चे हो। आत्म-अभिमानी स्थिति में रहने का और परमात्मा को अपना समझने का ज्ञान मिला, फिर योग माना सम्बन्ध। सम्बन्ध में सभी सम्बन्धों का अनुभव करना। मुक्ति और जीवनमुक्ति का अनुभव करना। सृष्टि चक्र का ज्ञान समझदार बना देता है। बना बनाया ड्रामा है, पर ऐसा सुन्दर ड्रामा बना हुआ है, क्या यह पता था कि सभी धर्म वाले यहाँ पहुँच जायेंगे। जब पता चला कि हमारा धर्म है शान्ति, फिर कर्मों में चेन्ज आ जाती है। अटेन्शन रहे कि मन-वाणी-कर्म श्रेष्ठ हों। उसी से ऑटोमेटिक अनेक आत्माओं को शेयर, केयर, इन्सपायर कर सकेंगे। केयरलेस नहीं रहना है, तो यह कर्म बड़े बलवान हैं। परमात्मा सर्वशक्तिवान है पर उनकी याद से, उनका बच्चा अपने को समझने से, स्टूडेन्ट बन करके अच्छी पढ़ाई करने से बहुत कमाई है। जितने अच्छे कर्म करो उतना अच्छा। बाबा ने जो सिखाया है वो और ड्रामा के सिवाए और कुछ मन में आता ही नहीं है। कराने वाला बाबा है परन्तु ड्रामा में हमारा अटेन्शन अपने कर्मों पर है, ध्यान ईश्वर में है और ज्ञान कहता है, सभी मेरे मित्र हैं, बाबा मेरा मित्र है, मैं अपना मित्र तो ये सब मेरे मित्र हैं। मित्रता भाव से कर्म अच्छे हो जाते हैं। अभी यहाँ जो भी बैठे हैं, हमारा आपस में मित्रता भाव है। कर्म बड़े बलवान हैं। अनुभवीमूर्त हैं। अगर तपस्या और अनुभव है तो सेवा ऑटोमेटिक है। अभी तपस्या से जो सेवा हो रही है, सारे विश्व को वायब्रेशन जा रहे हैं। यह जो क्लास का संगठन है, यह भी विश्व को साक्षात्कार कराने वाला है। सभी आपस में एक-दो को देखकर, मिलकर खुश हो रहे हैं। कर्म को भी देखो, योग को भी देखो क्योंकि कर्मयोग, सहजयोग कहते हैं। धीरज का फल मीठा है, कभी भी उतावली में कुछ बोल दिया, नहीं। नम्रता, ज़रा भी अभिमान का अंश नहीं। फिर मधुरता, मैंने देखा, ये पाँचों बातें कर्म में चाहिएँ। एकाग्रता, अन्तर्मुखता से योगयुक्त बने हैं, अच्छा लगता है तो फिर ऐसे ही योगयुक्त रहने की आदत पड़ जाती है। ऑटोमेटिक एक नियम बन जाता है। मुस्कराने से सब सहज हो जाता है, इसलिए सीरियस नहीं रहना।

प्रश्न- दयालु बनने के लिए कौन-सी धारणा बहुत जरूरी है?

उत्तर- दया वाला जो है ना, उसकी अन्तिम घड़ियाँ भी अच्छी होंगी, यह गैरंटी है इसलिए कभी भी थोड़ा-सा भी तेज स्वभाव वाला नहीं बनना चाहिए। किसी को आँख दिखाने वाला, नहीं। दया वाला जहाँ भी होगा, वहाँ वायुमण्डल को मीठा और रूहानियत का बना देगा। रूहानियत के बिना दया नहीं हो सकती है। रूहानियत में ईश्वरीय स्नेह पैदा हो जाता है। रूहानी माना अपने को

आत्म-अभिमानी स्थिति में रखने से ईश्वरीय स्नेह हमें सम्पन्नता में ला रहा है। हमको मेहनत नहीं करनी पड़ती है, पर मोहब्बत से काम हो रहा है। औरों के स्वभाव के चक्कर या टक्कर से फ्री हैं। दया सहज पुरुषार्थी बना देती है। पुरुषार्थ कोई मेहनत वाला नहीं, पर सुस्त नहीं होगा। बाबा ने एक बार पानी पीना सिखाया। पानी का ग्लास लेकर बैठकर पीओ। आजकल तो बोतल का रिवाज हो गया है। बोतल हाथ में है, यह शोभता नहीं है। हम कर्मयोग सिखाते हैं। औरों का अटेन्शन खिंचवाते हैं और हमारे ऐसे साधारण कर्म हैं तो वो प्रभाव नहीं निकलेगा। अच्छे कर्म से औरों को सीखने को मिलता है। अगर मेरे ही कर्म साधारण या जल्दी-जल्दी वाले हैं तो औरों को प्रेरणा नहीं देते हैं। जैसे कर्म मैं करेंगी, मुझे देख और करेंगे। मैं आज अचानक भण्डारे में गई, सब कुछ खोलकर देखा। कितनी चीज़ें थीं पर फिर भी बहुत अच्छी सफाई थी, यह देख मेरे अन्दर से निकला, बाबा वन्डर है। भण्डारे की सेवा करने वालों के प्रति कितना प्यार पैदा होता है।

प्रश्न- क्या बात हम ध्यान पर रखें जो आपस में जब भी मिलें तो मुस्करायें?

उत्तर- किसी का स्वभाव देखने से मुझ में रूहानियत नहीं रहेगी, उसके प्रति ईश्वरीय स्नेह नहीं होगा, न मैं मुस्करा सकूँगी, न ही मेरे को देख कोई मुस्करायेंगे। हमारे अन्दर रूहानियत, ईश्वरीय स्नेह का भण्डारा भरपूर हो, यह भण्डारा काल-कण्टक दूर करता है। सदा खुश रहने से बाबा को याद करना नहीं पड़ता है, बाबा की याद बहुत मीठी लगती है इसलिए बड़ा मीठा बनना है, इसमें आर्टिफिशियल चल न सके। कभी भी किसके साथ ऐसा बोल-चाल न हुआ हो, जो उनको भूले नहीं। ऐसा कभी न हो जो उसको घड़ी-घड़ी वही याद आए, यह अच्छा नहीं है। समय की कदर करनी है। संगमयुग और बाबा को सामने देखो। संगमयुग की एक-एक घड़ी सफल हो तो कभी दु:ख नहीं होगा। तो स्वभाव सरल हो, वृत्ति शुद्ध हो, रूहानी स्नेह हो।

प्रश्न: व्यर्थ संकल्प आए तो क्या करें?

उत्तर- शिवबाबा, ब्रह्माबाबा के रथ द्वारा हमको भी अपने जैसा विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त बना रहे हैं इसलिए थोड़ा भी कभी भूल से भी व्यर्थ संकल्प नहीं आ सकता है। अगर आता हो तो अभी-अभी बिचारे को छुट्टी दो। संगठन का जो वायुमण्डल है, उसकी पॉवर, व्यर्थ संकल्प को आने नहीं देती है। क्या फील करते हो? वाह बाबा वाह! बाबा, आपने हमको अपनी इतनी शक्ति दी है, शक्ति बाबा की है पर काम हमारे ऊपर कर रही है। फील होता है ना, बाबा की शक्ति कैसे काम कर रही है? बाबा को भी यह नशा है, अभी जो काम करता हूँ, सारे कल्प में नहीं करता हूँ। बाबा कितना अच्छा काम करता है। हम बच्चे कहते हैं, वाह बाबा वाह! बाबा कहते हैं, वाह बच्चे वाह! यह सुनते और कहते बाप और बच्चे दोनों खुश हो जाते हैं, चेहरा चमक जाता है। बाबा ने ब्रह्माभोजन खाने और उसको हज़म करने की शक्ति भी दी है। नहीं तो इतने बड़े यज्ञ के ब्रह्माभोजन को पचाना कम बात नहीं है।

प्रश्न- सकाश क्या है, कैसे मिलती है, कैसे देनी है?

उत्तर- सकाश हम बाबा से खींच रहे हैं, विश्व को दे रहे हैं। हमारे आपसी सम्बन्धों में सकाश की लेन-देन है। अभी हम हजारों-लाखों हो गये हैं। बाबा अव्यक्त होकर के कितनी सेवायें कर और करा रहा है। किसकी सकाश काम कर रही है? बाबा की ना! उसी सकाश से बाबा सबको यहाँ खींच करके हाज़िर कर देता है। सकाश एक पॉवर है लेकिन यदि ज़रा भी कमजोरी है, किसी स्वभाव के वश हैं, तो सकाश ले वा दे नहीं सकते हैं। आजकल थोड़ा किसी का स्वभाव सहन नहीं होता है। इसमें सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति आपेही काम करती है। कभी मैंने यह नहीं कहा होगा कि यह मेरे से सहन नहीं होता है। हमारे में इतनी कमजोरी नहीं हो। ❖

मात्र उपदेशक नहीं, उदाहरण भी बनिए।

5 सितम्बर 'शिक्षक दिवस' पर विशेष...

मूल्य शिक्षा – शिक्षा प्रणाली की ज्वलन्त आवश्यकता

ब्रह्माकुमार डॉ.हरीन्द्र, वाराणसी (उ.प्र.)

जब महान दार्शनिक और शिक्षाविद् सुकरात ने लोगों को बौद्धिक रूप से शिक्षित करने के लिए अपनी संस्था 'एकेडमी' खोली होगी तो उनके मन में यह ख्याल भी नहीं रहा होगा कि एक दिन ये शिक्षण संस्थान सबसे अधिक आर्थिक लाभ देने वाले करमुक्त (टैक्स फ्री) उद्योग में बदल जाएंगे और शिक्षा व्यवसायिक गतिविधियों का केन्द्र बनकर रह जाएगी। परन्तु वर्तमान समय यह सब कुछ हो रहा है।

मूल्य शिक्षा के प्रति संकोच का भाव क्यों?

क्या शिक्षण संस्थाओं का मूल्य यही है कि वे डिग्री/सर्टिफिकेट देकर व्यक्ति को लिपिक (क्लर्क) बनाने या धन कमाने के लिए सड़क पर छोड़ दें? आखिर, विद्यालय के अतिरिक्त अन्य कोई स्थान है जहाँ एक बालक को बेहतर इंसान बनाने के लिए मानवीय मूल्यों की शिक्षा देने का प्रावधान हो? विद्यालयों में शिक्षा के गिरते स्तर से सरकार और शिक्षाविद् सभी चिन्तित तो दिखाई पड़ते हैं परन्तु मूल्य शिक्षा को लागू करने के प्रति संकोच का भाव क्यों है? यह बात तो सभी स्वीकार करते हैं कि वर्तमान समय में विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों जैसे शान्ति, सहनशीलता, प्रेम, सेवाभाव, सहयोग इत्यादि की निरन्तर कमी होती जा रही है। आज के शिक्षित बच्चों के कंधों पर ही कल के समाज का उत्तरदायित्व है। जब उनमें मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं का अभाव रहेगा तो उनसे यह कैसे आशा की जा सकती है कि वे सामाजिक और पारिवारिक कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनें? संवेदनशून्य व्यक्ति से कर्तव्य-बोध की आशा नहीं की जा सकती है।

मूल्यों से भटकाव का दौर

समाज के बुद्धिजीवी लोगों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्यों को लागू करने के लिए सकारात्मक माहौल बनाने में आगे आना चाहिए। मीडिया और समाचार-पत्र भी मूल्यों को शिक्षा में लागू करने की आवश्यकता के प्रचार-प्रसार में प्रभावशाली भूमिका निभा सकते हैं। उच्च शिक्षा के लिए पूरे देश में उत्तरदायी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मूल्य शिक्षा के महत्व को बहुत पहले ही रेखांकित कर चुका है। इस संदर्भ में शिक्षा शास्त्रियों और सरकार में एक जैसी ही सहमति है परन्तु अब तक मूल्य शिक्षा को बच्चों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के सम्बन्ध में सरकारें ठोस फैसला नहीं ले सकी हैं। वास्तव में, वर्तमान समय राजनीति और राजनीतिज्ञ मूल्यों से भटकाव के दौर से गुजर रहे हैं जबकि शिक्षा का मानवीकरण करने के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

ज्ञानार्जन के बजाए धनार्जन

अगर भारत को विश्व-गुरु जैसे सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करना है तो मूल्य शिक्षा के बिना यह केवल

दिवास्वप्न है क्योंकि कोई भी राष्ट्र केवल धन-दौलत और भौतिक संसाधनों के बल पर वैश्विक नेतृत्व नहीं कर सकता है। योग्य, चरित्रवान, कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार नागरिक ही किसी राष्ट्र के महान बनने की पटकथा की पृष्ठभूमि की रचना करते हैं और केवल मूल्य शिक्षा ही इस प्रकार के नागरिकों को तैयार करने में सक्षम है। वर्तमान समय शिक्षा में भौतिकवादी दर्शन के तत्व की प्रधानता हो गई है। विद्यार्थी, अभिभावक और शिक्षक, तीनों ही ज्ञानार्जन के बजाय धनार्जन से अधिक प्रभावित हैं। यदि विद्यार्थी को नौकरी नहीं मिलती है तो वह अपने जीवन को व्यर्थ मानकर कुण्ठा और हताशा के सागर में डूब जाता है। यदि वर्तमान शिक्षा प्रणाली से युवा पीढ़ी की ऐसी फौज तैयार हो रही है तो यह बहुत बड़ी राष्ट्रीय क्षति है। यहाँ यह समझना और समझाना आवश्यक है कि नौकरी न मिलने से शिक्षा और जीवन व्यर्थ नहीं हो जाते हैं। जीवन में यदि धन कमाना आवश्यक ही है तो अन्य कई तरीके भी हैं लेकिन जीवन की सार्थकता धन कमाने से बहुत ऊँची है ।

क्या जीवन का उद्देश्य वस्तुओं का उत्पादन और विपणन मात्र है?

वर्तमान समय के पाठ्यक्रमों की प्राथमिकता देखकर तो यही लगता है कि यह संसार व्यापारिक केन्द्र है और मनुष्य उपभोक्ता से अधिक कुछ भी नहीं है और मनुष्य के जीवन का उद्देश्य वस्तुओं का उत्पादन और विपणन मात्र रह गया है। आधुनिक काल में बिजनेस-स्कूल को अच्छी निगाहों से देखा जाता है और जो बिजनेस - स्कूल वस्तुओं को बेचने वाले कुशल प्रबन्धकों को तैयार करता है, उसकी चर्चा चारों ओर होती है। लोग ऐसे स्कूल में प्रवेश के लिए लालायित रहते हैं तथा मुंहमांगी फीस देने में भी संकोच नहीं करते हैं। पुन: वही प्रश्न सोचने को मजबूर करता है कि क्या विद्यालयों की स्थापना मात्र वस्तुओं को खरीदने और बेचने की पढ़ाई करने के लिए है? फिर समाज को अच्छा बनाने वाले इंसान कहाँ से आएंगे? क्या मनुष्य का जीवन केवल धन-दौलत से सुखी हो सकेगा? आखिर हम मनुष्य के अन्दर श्रेष्ठ विचार, संस्कार और मूल्यों को जागृत करने के बारे में कब सोचना प्रारम्भ करेंगे? आज मनुष्य के जीवन में दु:ख, चिन्ता, निराशा, हताशा की वृद्धि से संसार में हिंसा, आतंक, भ्रष्टाचार, अपराध बढ़ते जा रहे हैं। क्या यह संसार सुखमय जीवन के लिए सुरक्षित जगह रह गया है? यदि इसका उत्तर 'नहीं' है तो तुरन्त ऐसी शिक्षा की पहल करने की आवश्यकता है जो समाज के लिए चरित्रवान और ईमानदार नागरिक तैयार कर सके। केवल वही शिक्षा इस प्रयास में सफल हो सकती है जो विद्यार्थियों को आत्म-अनुभूति कराकर उन्हें जीवन के व्यापक उद्देश्य से जोड़े। साथ ही विद्यार्थियों को यह भी समझा सके कि एक बेईमान प्रबन्धक और प्रशासक की तुलना में एक चरित्रवान प्रबन्धक और प्रशासक समाज के लिए महत्वपूर्ण है। यह आत्मभाव विद्यार्थियों में जागृत करना बहुत ही आवश्यक है तब ही वर्तमान संसार की अवस्था और व्यवस्था का सुधार सम्भव है ।

जैसी शिक्षा, वैसा सामाजिक आचरण

हम जिस प्रकार के शैक्षिक दर्शन के आधार पर विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं, उसी प्रकार के कल के समाज के कर्णधार तैयार होते हैं। समाज में फैले हिंसा, आतंक, भ्रष्टाचार आदि के लिए कोई दैवी सत्ता या समय दोषी नहीं है। सभी बुराइयों के लिए समय या व्यवस्था को दोषी ठहरा देना बहुत आसान होता है परन्तु समय की रचना कौन करता है? स्वयं मनुष्य या कोई ईश्वरीय सत्ता? अपने खाने-पीने, सोने, सोचने, रहने, करने इत्यादि क्रियाओं के लिए समय का निर्धारण मनुष्य स्वयं करता है। आवश्यकता उपर्युक्त क्रियाओं के चयन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है परन्तु कोई अदृश्य सत्ता इसमें हस्तक्षेप नहीं करती है। यदि समय अपराध के लिए दोषी होता तो एक ही समय सर्वत्र एक समान ही अपराध होते परन्तु ऐसा नहीं है। वास्तव में समाज या संसार की अवस्था और व्यवस्था मनुष्य के संकल्प और कर्म से संचालित होती है। जिस देश में, जिस प्रकार के मूल्यों का शिक्षा व्यवस्था में समावेश

होता है, उसी प्रकार का आचरण वहाँ के नागरिकों द्वारा किया जाता है। वर्तमान समय में इस विश्व में कई ऐसे देश हैं जहाँ हत्या जैसे अपराध होते ही नहीं हैं अथवा अत्यन्त नगण्य हैं। उदाहरण के तौर पर मॉरिशस देश में जेब कटने जैसी छोटी-मोटी घटनाएं मात्र होती हैं।

मानवीय कर्म और व्यवहार का व्यापारीकरण

जिन देशों में धन कमाने और वस्तुओं के संग्रह और उपभोग की प्रवृत्ति से शिक्षा प्रणाली का दर्शन प्रभावित है, प्राय: उन देशों में धन, अपराध की मुख्य केन्द्रीय प्रवृत्ति बन गया है। इन देशों में मनुष्य के कर्म, व्यवहार और क्रियाएं व्यापार में बदल गए हैं । ऐसे समाज में हानि और लाभ पहले तय कर लिये जाते हैं और बाद में उसके अनुसार ही मानवीय सम्बन्धों की रूपरेखा तय की जाती है। ऐसे समाज में सलाह देने तक की कीमत वसूली जाती है। इसलिए बच्चों के लिए पाठ्यक्रम बनाते समय मानवीय मूल्यों का समावेश करना बहुत ही आवश्यक है अन्यथा आने वाले समय में घर हमारे लिए इस धरती पर शान्ति और सुकून की अनुभूति का सबसे सुरक्षित स्थान नहीं रह जाएगा। परिवार केवल आवश्यकताओं को पूरा करने वाले विनिमय केन्द्र बनकर रह जाएँगे। मूल्यों के पतन के कारण, आने वाले समय में वृद्ध लोगों के लिए घर, सेवा की जगह नहीं रह जाएगी और वृद्धाश्रम में शरण लेने के लिए उन्हें बाध्य होना पड़ेगा क्योंकि हम बच्चों को धन कमाने की मशीन बनाने के लिए उन्हें बचपन से ऐसी ही शिक्षा दे रहे हैं। जब हमें सेवा के लिए बच्चों की आवश्यकता पड़ेगी तो सेवाभाव की कमी के कारण वे समयाभाव का रोना रोएंगे और स्वयं सेवा न करके वृद्धाश्रम का रास्ता दिखा देंगे।

कोई भी जन्म से अपराधी नहीं होता

आखिर समाज की इस पतनशील व्यवस्था के लिए दोषी कौन? क्या बच्चे? बच्चों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। कोई भी बालक जन्म से न तो अपराधी होता है और न ही वह किसी विशेष धर्म के अनुयायी के रूप में जन्म लेता है। इस संसार में उसे प्रदान की गई शिक्षा और उसके साथ किए गए प्रतिक्रियात्मक उग्र व्यवहार ही उसे अपराध की दुनिया की ओर धकेल देते हैं। जिस बच्चे के साथ यह समाज प्रेमपूर्ण व्यवहार करता है, तो यह मनोवैज्ञानिक रूप से पूर्णत: सत्य है कि वह अपराधी नहीं बन सकता है। इसी प्रकार माता-पिता द्वारा अपनाए गए धर्म की शिक्षा दिए जाने के कारण ही बालक उनके ही धर्म को स्वीकार कर लेता है। यह बात भी मनोवैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हो चुकी है। यदि किसी बालक को जन्म के कुछ महीने बाद किसी दूसरे धर्म के व्यक्ति के पास रख दिया जाए और 18 वर्ष बाद उसे उसके माता-पिता के धर्म के बारे में बताया जाए तो वह स्वीकार नहीं करेगा।

मात्र कानून से श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण सम्भव नहीं

जीवन में मूल्यों को धारण करने के लिए आत्मिक शान्ति एवं शक्ति की आवश्यकता होती है। परन्तु इस सृष्टि रंगमंच पर लम्बे समय से कर्म, विशेषकर नकारात्मक कर्म करने से मनुष्य की आत्मिक शक्ति अत्यन्त कमजोर हो गई है। इस शक्ति के अभाव में ही क्रोध की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है । प्रेम और शान्ति आत्मा की शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों से जीवन में मूल्यों को धारण करने की क्षमता उत्पन्न होती है और मनुष्य सत्कर्म करता है। यदि हम वास्तव में एक वर्गविहीन लोकतान्त्रिक समाज की रचना करना चाहते हैं तो मूल्य और अध्यात्म की शिक्षा अपरिहार्य है। कानून और दण्ड की, समाज की व्यवस्था को बनाए रखने और संचालित करने में भूमिका हो सकती है परन्तु मात्र कानून के द्वारा ही श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण नहीं किया जा सकता ।

मूल्य शिक्षा से सकारात्मक वातावरण का निर्माण जरूरी

ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर, लोगों में व्याप्त अज्ञानता और देहअभिमान को परिवर्तन करके कालचक्र के नकारात्मक प्रवाह को सकारात्मक दिशा में मोड़कर, सतयुगी दुनिया की संकल्पना को साकार करना सम्भव है। यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित तथ्य है कि यदि किसी

स्थान की जनसंख्या के एक प्रतिशत लोग, किसी एक ही प्रकार के संकल्प में स्थित होते हैं तो उससे उत्पन्न प्रकम्पनों के शक्तिशाली प्रभाव से अन्य लोगों के विचार और व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगता है। जब सत्कर्म करने वाले व्यक्ति एक ही स्थान पर, एक सतयुगी समाज की नवरचना का संकल्प करते हैं तो वायुमण्डल में पवित्रता के प्रकम्पनों का प्रवाह शक्तिशाली होने लगता है। मनुष्य और प्रकृति के तत्वों के गुण-धर्म बदलने लगते हैं।

मनुष्य का मन अत्यन्त संवेदनशील होता है और वह वातावरण से अत्यन्त सक्रिय रूप से प्रभावित होता है इसलिए यदि हम वास्तव में विद्यालयों के वातावरण को सकारात्मक बनाकर योग्य और चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना चाहते हैं तो इसका एकमात्र साधन है पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को लागू करना। यही समय की पुकार है और वर्तमान समाज की सर्व समस्याओं का समाधान भी है। ❖

जहाँ चाह, वहाँ राह

ब्रह्माकुमार शम्भू प्रसाद, सोडाला, जयपुर

विकारों को त्यागना सहज तो नहीं मगर दृढ़ता का संस्कार हो तो काम, क्रोध दोनों को आसानी से जीता जा सकता है। दृढ़ता का संस्कार तब निर्मित होता है जब कर्म के प्रति असीम श्रद्धा अन्दर से उमड़े।

काम विकार को महाशत्रु कहा गया है मगर क्रोध महाशत्रु इतना निर्लज्ज है कि किसी की उपस्थिति की भी परवाह नहीं करता। जब चाहे, जैसा उपद्रव करना चाहे, उसके लिए सब सहज है किन्तु यदि 'चाह' हो कि क्रोध की निर्लज्जता को भगाना ही है तो 'राह' मिल जाती है।

अनुभव क्रोध पर विजय पाने का

मन में ऐसा संकल्प जागृत हुआ कि गुरु-घंटाल क्रोध मुझे अंधेरे में रखने में इतना सिद्ध-हस्त है कि मैं सोचने लगता हूँ कि क्रोध मैंने ही किया है, मैं ही क्रोधी हूँ। मगर एक क्षण बाद यह संकल्प उठा कि मैं तो परमधाम से अवतरित हुई शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, मैं तो तब क्रोध-मुक्त आत्मा थी, स्वभावतः अथवा मूल रूप से मैं क्रोधी नहीं हूँ अपितु परमपवित्र व शान्त स्वरूप आत्मा हूँ। कई प्रश्न उठे मन में यथा कि क्या क्रोध अतिथि बन कर रहता है? क्या यह जासूस है? क्या यह मुझे पागल बनाकर रखने वाला महा-स्वार्थी कसाई है? क्या यह ही देव से असुर बनाकर मेरा चेहरा बिगाड़ता है? क्या यह ही मेरे चलन को विकृत कर मुझ विजयी को पराजित करने में लगा रहता है? शायद यही रावण है जिसने उस एक सीता का अपहरण नहीं किया है अपितु मैं भी वही एक सीता हूँ जिसकी सुख-शान्ति का क्रोध ने अपहरण कर लिया है। इसके बाद मैं हर क्षण ऐसी जागृति में रहने लगा कि अपहर्त्ता क्रोध को बंधक बना कर बाबा के हवाले करना ही है।

विचारों की श्रृंखला चलते-चलते नींद में ऐसा क्षण आया जब मैंने स्वप्न में देखा कि बहुत सारे लाल गाजर एक गली में किसी ट्रक से उतार कर फैला दिये गये हैं। वे बहुत बुरी तरह कुम्हला गये हैं। बहुत सारे मेरे परिचित उन्हें इस तरह उलट-पलट रहे हैं कि उन्हें उनकी खोई हुई लालिमा पुनः प्राप्त हो जाये। मेरी समझ में आया कि ये गाजर मानो 63 जन्मों की क्रोधाग्नि से झुलसी मेरी विभिन्न स्थितियाँ हैं। अनगिनत बार क्रोध रूपी भूत ने मेरी शान्त स्थिति को अपने चंगुल में फँसा कर ऐसी विकृत व मनहूस स्थिति में पहुँचाने का कुकर्म चुपचाप किया है जिसका सबूत इस शरीर का चेहरा भी दे रहा है।

मैंने बाबा को सौंपा अपराधी को

जैसे ही यथार्थ बोध 'क्रोध' के बारे में हुआ तो मैंने योग में बाबा को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताया और परिणामतः मुझे प्रतीति हुई कि अब क्रोध बाबा के समक्ष समर्पित हो गया है। देवी-देवता बनने का पुरुषार्थ यदि चरम में पहुँचे तो परमपिता शिव बाबा की मदद न मिले, यह हो नहीं सकता। ❖

आत्महत्या से आत्मविश्वास की ओर

ब्रह्माकुमारी स्वाति, मीरा रोड, मुम्बई

मेरा अलौकिक जन्म 8 फरवरी, 2010 को हुआ। इस स्वर्णिम दिवस को मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी थी। मेरा अतीत अत्यंत मानसिक तथा शारीरिक कष्टों से गुजर चुका था।

साइकोलोजी (मनोविज्ञान) विषय को लेकर मैं बी.ए. की पढ़ाई कर रही थी, होवनहार थी। कॉलेज में सभी प्रतिस्पर्धाओं में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती थी, महत्वाकांक्षी भी थी। मैं साइकोलॉजिस्ट (मनोविज्ञानी) बनना चाहती थी। सब कुछ ठीकठाक था लेकिन बी.ए. अंतिम वर्ष में एडमिशन लिया ही था कि नजदीकी रिश्ते में मेरी शादी करा दी गई। शादी के बाद बी.ए.अंतिम वर्ष में अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हो गई। बहुत इच्छा जताने के बावजूद भी मेरी आगे की पढ़ाई रोक दी गई और मेरी महत्वाकांक्षा दबा दी गई। मैं घुटकर रह गई।

दो साल बाद एक बेटे की माँ बनी। तभी मुझे आई.डी.बी.आई.बैंक में नौकरी भी मिल गई। कहने के लिए सबकुछ ठीकठाक था परंतु ससुराल में कई कारणों से मैं बहुत तनाव से गुजर रही थी। डिप्रेशन की स्टेज आ गई। मनोरोग चिकित्सक से दवाई लेने के बावजूद भी स्थिति में कोई सुधार नहीं था। सहमी-सहमी रहती थी। आत्मविश्वास पूरी तरह गँवा चुकी थी। रास्ते चलते-चलते भी कई बार रो पड़ती थी। मन दुखों से भर गया था।

तभी अचानक मुझ पर फिर एक और दुखों का पहाड़ टूट पड़ा जब हर वक्त दिलासा देने वाला, दुख बांटने वाला मेरा भाई महज 4 दिन की बीमारी में चल बसा। मेरी हालत पागलों जैसी हो गई। जिंदगी जैसे-तैसे गुजरती गई, फिर दूसरे बेटे का जन्म हुआ लेकिन कोई भी बात मन को शान्ति नहीं दे पा रही थी। दिन-प्रतिदिन जिंदगी नर्क ही बनती जा रही थी। क्या करूँ? कहाँ सुख-चैन, सुकून मिलेगा, तलाशती फिरती थी।

घोर निराशा में डूबी हुई होने से मैंने ठान लिया, अब जीवन को खत्म करना ही है। आत्महत्या करने निकली लेकिन किन्हीं पुण्य कर्मों के फलस्वरूप इस जघन्य पाप से एक महिला द्वारा बचा ली गई। उसने बहुत ही अपनेपन से, सहानुभूति जताते हुए मुझे सत्संग का मार्ग बताया। मैं तो बचपन से ही नास्तिक थी। मंदिर, पूजापाठ में बिल्कुल विश्वास नहीं करती थी लेकिन उनके कहने पर सत्संग में जाने लगी। मन वहाँ जरा भी नहीं लगता था, फिर भी जा रही थी शांति की खोज में। अंदर ही अंदर घुटती रहती थी। लोग उस सत्संग को सराहते थे, खुश होते थे लेकिन मेरी घुटन और अशान्ति जरा भी कम नहीं हो रही थी, ना मेरी परिस्थिति में बदलाव आया, न विचारों में सकारात्मकता आई।

एक दिन मैं बदहवासी में घूम रही थी कि कानों में मधुर-शांत गीत के बोल पड़े और मैं अपने आप खिंचती हुई उस ओर चली गई। वहाँ जाकर देखा, मंद-मंद लाल प्रकाश, ध्यानमग्न बैठे हुए श्वेत वस्त्रधारी, मैं भी मंत्रमुग्ध-सी वहीं बैठ गई। गीत के बाद 'समस्याओं का समाधान कैसे करें' इस विषय पर मार्गदर्शन किया गया। उसी क्षण महसूस हुआ कि इसी की खोज में मैं दर-दर भटक रही थी। समझाया गया कि यह राजयोग की शिक्षा स्वयं परमात्मा हमें देते हैं। उसी क्षण मैंने इस राह पर चलने का निश्चय कर लिया।

यहाँ मुझे आत्मा का, परमात्मा का, ड्रामा का सत्य ज्ञान मिला। मैं स्वयं शिवबाबा के द्वारा चुनी गई 'कोटों में कोई, कोई में भी कोई विशेष आत्मा हूँ' इस प्रकार के स्वमानों से ऐसा नारायणी नशा चढ़ा कि मेरी कांटों भरी जिंदगी में

बहार आने लगी। रोज मुरली सुनने सेवाकेन्द्र पर जाने लगी। मुरली रूपी संजीवनी बूटी ने मुझे जीवनदान दे दिया और सकारात्मक दृष्टिकोण निर्मित किया।

मेरी जिंदगी में अब दूर-दूर तक भी नकारात्मक विचारों के लिए कोई जगह नहीं है। जिनको पहले मैं दिन-रात कोसती थी, बददुआएँ देती थी, अब उनके लिए रत्तीभर भी बदले की भावना नहीं है। सोचती हूँ, मेरा पहले का हिसाब-किताब था जो चुक्ता हो गया। अब सभी के लिए शुभभावना-शुभकामना मन में भर गई है। शुभ संकल्पों का खजाना सदा मेरे साथ रहता है। पवित्रता की धारणा तो ज्ञान में आने के कई साल पहले से ही थी। अब ड्रामा के ज्ञान ने मुझे और भी निश्चिंत बना दिया।

मुझ पर बाबा की नजर पड़ी, मैं उनके लिए विशेष बच्ची हूँ, यही सोच-सोच निरंतर खुशियों का अनुभव करती हूँ। सोचती हूँ कि जैसे मुझ आत्मा का आत्मविश्वास बढ़ा, आत्मबल बढ़ा, ऐसे सभी का बढ़े। बाबा ने मुझे जो ईश्वरीय सेवा का मौका दिया उससे तो दिन दोगुनी, रात चौगुनी खुशी मिल रही है। निमित्त बहन के निर्देशन अनुसार क्लास और कोर्स कराने की सेवा भी करती हूँ। सप्ताह में दो दिन स्कूल में जाकर ''टच दी लाइट'' के तहत बच्चों की क्लास लेती हूँ। सभी बहनों के स्नेह-प्यार से हल्केपन का अनुभव करती हूँ। अब तो कितनी भी बड़ी परिस्थिति आ जाए, मन विचलित नहीं होता। यही सोचती हूँ, स्वयं सर्वशक्तिवान हजार भुजाओं वाला बाप मेरे साथ है। बाबा ने इस कौड़ीतुल्य आत्मा को अपना बनाकर हीरेतुल्य बना दिया। इसी नशे व खुशी में सारा दिन मगन रहती हूँ। बाबा को दिल से लाख-लाख धन्यवाद देते हुए अंतर्मन से यही बोल निकलते हैं –

ये दिल हर पल गाता रहता, एहसान तुम्हारा ओ बाबा,
बदली हमारी किस्मत पाकर प्यार तुम्हारा ओ बाबा।।

❖

बाबा की शक्ति से दवाओं से मुक्ति

ब्रह्माकुमारी वीणा, जमशेदपुर (झारखण्ड)

सन् 2006 में मैं पहली बार अपने युगल के साथ ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में गई। वहाँ का वातावरण मुझे बहुत ही अलग लगा और निमित्त बहन ने हमें सात दिन का ज्ञान का कोर्स कराया पर मुझे ज्ञान की बातें बहुत ज्यादा समझ में नहीं आई। मेरे युगल को सारा ज्ञान समझ में आ गया। युगल के कहने पर मैं हर गुरुवार सेवाकेन्द्र पर जाने लगी और कुछ-कुछ ज्ञान समझ में आने लगा पर बाबा पर दृढ़ विश्वास अभी भी बाकी था। सन् 2011 में किसी लौकिक कारण से मुझे डिप्रेशन हो गया। मुझे डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने चार दवाइयाँ चालू कर दी और कहा, अब जीवन भर आपको ये दवाइयाँ खानी पड़ेंगी।

मैं सारा दिन दवाइयाँ खाकर सोई रहती, किसी काम में मन नहीं लगता था, नकारात्मक सोच आती रहती थी। सभी मुझसे कतराने लगे। लौकिक माँ और लौकिक भाई-बहनें मुझे समझाते थे पर कुछ असर नहीं होता था। जिन्हें मैं अपना समझती थी वे सभी मुझसे दूर जाने लगे।

एक गुरुवार को मैं सेवाकेन्द्र गई और मुरली के बाद निमित्त बहन के सामने रो पड़ी, कहा, मैं चार साल से दवाइयाँ खा-खाकर तंग आ चुकी हूँ। उन्होंने कहा, सारी दवाइयाँ बन्द हो जाएँगी, डिप्रेशन भी पूरा ठीक हो जायेगा, बस बाबा पर दृढ़ विश्वास कीजिए, बाबा सब ठीक करते हैं। फिर मैं सेवाकेन्द्र पर ज्यादा जाने लगी और जाते-जाते बाबा में दृढ़ विश्वास बैठ गया। अब मेरी डिप्रेशन की सारी दवाइयाँ बन्द हो गई हैं, सारा दिन खुश रहती हूँ और जीवन पूरी तरह बदल चुका है। अब तो कहती हूँ, ''शुक्रिया बाबा''। ❖

ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों से भरपूर अनेक मनभावन राखियाँ ज्ञानामृत कार्यालय में प्राप्त हुई हैं। स्नेही प्रेषक बहनों को हार्दिक आभार और दिल की दुआयें! (सम्पादक)

सर्वांगीण मेकप

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

शरीर का सुंदर और स्वस्थ होना एक बहुत बड़ी नेमत है। मंदिरों में जिन देवी-देवताओं के दर्शनों के लिए भीड़ उमड़ती है उनकी आन्तरिक दिव्यता के साथ उनका सुन्दर शरीर भी आकर्षण का केन्द्र होता है। अत: देवताओं का वंशज मानव भी अपने को सुन्दर बनाना चाहता है और इसके लिए वह मेकप का सहारा लेता है।

चेहरे का मेकप

मेकप (Make-up) का अर्थ होता है कमी को पूरा करना। यदि किसी की आँख की सुंदरता में कोई कमी है तो वह बनावटी साधनों के द्वारा आँखों को सुंदर बना सकता है। होंठों की सुंदरता में कमी है तो बनावटी लेप लगाकर उन्हें सुंदर बना सकता है। सम्पूर्ण चेहरे की सुंदरता को बढ़ाने वाले भी कई प्रकार के लेप बाजार में मिलते हैं। इसी प्रकार हाथों, पाँवों, उंगलियों की सुंदरता भी बढ़ाई जा सकती है।

शरीर के अन्दर विभिन्न तत्वों का मेकप

कमी केवल बाह्य इंद्रियों और चेहरे में ही नहीं होती जिनका मेकप करके हम सर्वांग सुन्दर बन जाएँ। कई बार शरीर को निर्मित करने वाले विभिन्न तत्वों में भी कमी आ जाती है। अत: उनका भी मेकप होना चाहिए। आँख, नाक, होंठ कितने भी सजे हुए हों पर यदि शरीर में खून की कमी है तो चेहरे का पीलापन सारा मेकप बिगाड़ देता है। यदि शरीर की हड्डियाँ, त्वचा के बाहर झांक रही हों तो भी चेहरे का सारा मेकप फीका पड़ जाता है। अत: बाहरी मेकप के साथ-साथ शरीर के भीतर तत्वों को संतुलित मात्रा में बनाए रखना, उनकी कमी ना होने देना भी जरूरी है।

शारीरिक आकृति का मेकप

जन्म के समय शरीर की लम्बाई और मोटाई में एक सन्तुलन होता है परन्तु बाद में कई बार बिगड़ने लगता है। कभी पेट बाहर निकल आता है और कभी बहुत अन्दर चला जाता है। दोनों अवस्थाओं में मेकप की जरूरत है। सन्तुलित शारीरिक आकार, चेहरे की सुन्दरता की कमी पूरी कर सकता है। अत: बढ़े हुए मोटापे को कम करना या अति दुबलेपन को दूर करना, यह भी मेकप का एक हिस्सा है।

आत्मिक गुणों का मेकप

उपरोक्त तीनों पहलुओं के साथ-साथ मेकप का एक चौथा पहलू भी है और वह है आत्मिक गुणों का मेकप। मान लीजिए, किसी व्यक्ति ने चेहरे को, शरीर को बहुत सुन्दर सजा लिया पर अन्दर में क्रोध का ज्वार है जिसकी भंगिमा चेहरे पर स्पष्ट दिखाई पड़ रही है। क्या क्रोध से भरा चेहरा सुन्दर लग सकता है? हमने बाहर मेकप किया, बाहरी कमी को पूरा किया पर अन्दर जो शान्ति की, धैर्य की, प्रेम की, पवित्रता की, सहनशीलता की कमी है इसे पूरा किए बिना सुंदरता अधूरी है।

बिना प्रयत्न, तुरन्त प्राप्ति की चाहना का नाम है क्रोध

क्रोध क्या है, क्यों आता है? क्रोध, बिना प्रयास किए, बिना मेहनत किए तुरन्त प्राप्ति करने की प्रवृत्ति का नाम है, कैसे? एक मालिक के घर नौकर नया आया है। उसे मालिक के कार्यालय की सफाई का काम दिया गया है। नौकर द्वारा साफ किए कमरे को देख मालिक खुश होने के बजाए आग बबूला हो रहा है कि तुमको कुछ नहीं आता। माना कि उसे कुछ नहीं आता तो उसे सिखाने में समय और मानसिक ऊर्जा लगाइये। हम ये दोनों नहीं लगाना चाहते पर कार्य एकदम बढ़िया चाहते हैं। हम समय न लगाकर क्रोध द्वारा उसे मिनट मोटर में हुआ देखना चाहते हैं, इस प्रवृत्ति

का नाम है क्रोध।

शान्तिप्रिय व्यक्ति का बल है आन्तरिक बल

एक शान्तिप्रिय व्यक्ति अपने सामने आने वाली प्रतिकूल बातों, परिस्थितियों और व्यक्तियों को देखकर सोचता है कि इन्हें पार करने के लिए मैं आन्तरिक बल, शुभभावना के बल और सहनशीलता के बल का प्रयोग करूँ। भले ही इसमें मुझे थोड़ा समय लगेगा परन्तु मेरा सकारात्मक विचार सामने वाले व्यक्ति में भी और परिस्थिति में भी बदलाव लाकर स्नेह, सद्‌भाव और समायोजन का रास्ता अवश्य निकालेगा। इसके विपरीत, क्रोध को बल के रूप में प्रयोग करने वाला व्यक्ति प्रतिकूलताओं को – आग बबूला होकर, नकारात्मक शब्द, अपशब्द बोलकर, भय दिखाकर, धमकी देकर, मिनट मोटर में अनुकूल बना लेना चाहता है। वह बिना मेहनत किए और धैर्य रखे दूसरों के बदलाव रूपी फल को पाना चाहता है जैसे कि एक चोर बिना कमाए ही धन को पा लेना चाहता है।

क्रोध चोरी है शैतान की दौलत की

एक चोर किसी दुकान में घुसकर तिजोरी से 50 हजार चुरा लेता है और सोचता है, दूसरे लोग पैसे पाने के लिए यूँ ही महीने भर मेहनत और इन्तजार करते हैं, मैंने तो बिना मेहनत, बिना इन्तजार तुरन्त पैसे पा लिए। लेकिन वह समाज से मुँह छिपाता फिरता है। पुलिस के भय में खाता है, भय में सोता है, कुसंग से घिरा रहता और 'चोरी का धन मोरी में' इस कहावत के अनुसार, उस धन को भी निरर्थक कार्यों में उड़ा देता है। क्रोध भी एक प्रकार की चोरी है। इसे हमने शैतान (रावण) से चुराया है। हम सब मूल रूप में परमात्मा शिव की सन्तान शान्त स्वरूप आत्माएँ हैं। हमारी मूल दौलत शान्ति है। क्रोध तो रावण की सम्पत्ति है जिसे जाने-अनजाने हमने अपना मान लिया है।

बुरा लगता है क्रोधी कहलवाना

किसी अन्य की चीज हमारे हाथ में देखकर कोई टोक दे कि यह चीज आपने चुराई है क्या? तो हमें बुरा लगता है, हम उसे छिपाने की कोशिश करते हैं या उसके बारे में झूठे तर्क देकर सिद्ध करते हैं कि यह चोरी की नहीं, मेरी है। इसी प्रकार कोई हमें क्रोध करते देख ले या कभी हमें कह दे, आपको तो क्रोध बहुत आता है, मैंने अमुक दिन आपको लाल-पीला हुआ देखा था, तो क्या हम मान लेते हैं कि हाँ, मैं क्रोधी हूँ? नहीं ना। तब तो हम 'बात ही ऐसी थी, उसे ठीक करने के लिए क्रोध न चाहते भी करना पड़ा' आदि-आदि तर्क देकर अपने को ठीक सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। अगर हमें हमारे क्रोध पर गर्व होता तो हम शान से कहते कि हाँ, मुझमें क्रोध है पर अन्तरात्मा जानती है कि यह गर्व की नहीं बल्कि शर्म की बात है कि हमने शैतान की वृत्ति को चुराकर उसका काफी स्टॉक अपने भीतर छिपा रखा है और जरूरत पड़ने पर चोरी-छिपे उस स्टॉक का प्रयोग भी करते हैं पर साथ ही यह ध्यान भी रखते हैं कि कोई देख न ले और क्रोधी कह न दे।

सर्वांगीण मेकप होगा मूल गुणों की कमी को पूरा करने से

क्रोध के अलावा और भी तो कई विकार हैं जिनके रहते मेकप पूर्ण नहीं माना जा सकता। व्यक्ति कितना भी शृंगारित हो, महंगे लिबास में हो पर यदि अहंकार की गिरफ्त में है तो अकेला पड़ जायेगा। सुंदरता पर अहंकार का ग्रहण लग जाएगा। ईर्ष्या, घृणा रूपी भीतर की कुरूपता, बाहर के सौन्दर्य पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर देगी। ये सभी विकार आत्मा के भीतर मूल सात गुणों (ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति) की कमी के कारण उत्पन्न होते हैं। मेकप सम्पूर्ण तब हो जब इन मूल गुणों में आई कमी को पूरा किया जाए। हम देखते हैं कि एक छोटे बच्चे में ये सातों गुण स्वाभाविक होते हैं। वह बिना बाहरी सजावट के भी सभी को आकर्षित करता है। उसकी आँखों से मासूमियत झलकती है, वाणी से सरलता, चेहरे से निष्कपट मुस्कान और कर्मों में निश्चिन्तता होती है। पर ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, इन आन्तरिक गुणों से दूरी बना लेता है और कपड़ों, बालों, जूतों आदि से सुंदरता का निर्माण

करने की कोशिश करता है, फिर भी बाल्यावस्था जैसी दिल को लुभाने वाली सुंदरता नहीं बना पाता।

परमात्मा पिता हैं सुप्रीम ब्यूटिशियन

दिल को लुभाने वाली सुंदरता का दाता है दिलाराम। दिलाराम अर्थात् सभी के दिलों को आराम देने वाला परमपिता परमात्मा शिव। उन्हें सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् कहा जाता है। इसका अर्थ है वे परमसत्य हैं, परमकल्याणकारी हैं और परमसुंदर हैं परन्तु उनके पास शरीर तो है ही नहीं फिर उनके पास कौन-सी सुंदरता है? अशरीरी परमात्मा पिता के पास गुणों की सुंदरता है, वे गुणों के भण्डार हैं। शान्ति, प्रेम, आनंद आदि सभी गुणों के वे सागर हैं। अपनी इसी सुंदरता के संग का रंग लगाकर उन्होंने देवताओं को सर्वांगीण रूप से सुंदर बनाया है। हम आत्मा भी मन-बुद्धि को एकाग्र करके परमधाम में उनके सम्मुख स्थिर हो जाएँ तो उनकी दुआ भरी किरणें, स्नेह और शक्ति से ओत-प्रोत किरणें हमें हमारे मूलगुणों से भरपूर कर देंगी। जैसे पार्लर में जाने वाला, ब्यूटिशियन (सौंदर्य-प्रसाधक) के समक्ष स्थिर होकर बैठ जाता है, बाकी सारे कार्य वह ब्यूटिशियन स्वयं कर लेता है। इसी प्रकार परमात्मा पिता भी सुप्रीम ब्यूटिशियन हैं। हमें हमारे मन-बुद्धि को उनके सामने समर्पित करना है, शेष सजाने, शृंगारने का कार्य वे स्वयं कर लेंगे। ❖

मुझे शिवबाबा पर पूर्ण निश्चय है

ब्रह्माकुमार नरेन्द्र सिंह, केन्द्रीय कारागृह, अलवर (राजस्थान)

सिक्ख धर्म से ताल्लुक होने के कारण मैं बचपन से ही गुरुद्वारे जाता था और पाठ-कीर्तन करता था। अनजाने में हुए अपराध की वजह से अगस्त, 2015 में मुझे जेल आना पड़ा। मुझ पर हत्या और लूट का केस दर्ज था। मैं बहुत चिंतित और परेशान रहने लगा। सन् 2009 में करंट लगने की वजह से मैं विकलांग (चलने-फिरने में असमर्थ) हो चुका था। मुझे लगने लगा कि मैं बहुत अभागा हूँ कि भगवान सारा कष्ट मुझे ही दे रहे हैं। इसी बीच ब्रह्माकुमारी बहन-भाई जो जेल में आते थे तथा ईश्वरीय ज्ञान सुनाते थे, उन द्वारा सुनाई गई बातें मुझे बहुत युक्तिपूर्ण लगीं और साप्ताहिक कोर्स कर मैं मुरली सुनने लगा।

जनवरी, 2017 में 18 दिवसीय राजयोग अभ्यास के बारे में हमें बताया गया जिसमें अमृतवेले दो बजे से पाँच बजे तक बैठकर परमपिता शिवबाबा को याद करना था। यह मुझे बहुत मुश्किल कार्य लग रहा था, फिर भी मैं दृढ़ निश्चय कर योग लगाने लगा जिससे मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि मुझमें अपार शक्ति की लहरें दौड़ रही हैं। इसके बाद मैं बाबा की याद व ज्ञान में और भी उमंग से आगे बढ़ता रहा।

इसी बीच मुझे एक अन्य केस में जमानत मिल चुकी है, यह मेरे लिए अति खुशी की बात है। हत्या व लूट के केस में जो भी गवाहियाँ हुईं, उनमें मेरा कहीं भी नाम नहीं आया। इस तरह शिवबाबा की दुआ से मैं बहुत जल्दी जेल से छूट जाऊँगा। मुझे बाबा पर पूरा-पूरा निश्चय व विश्वास है। जेल में जब से इस ज्ञान-मार्ग में आया हूँ, मुझे किसी प्रकार की चिंता या तनाव महसूस नहीं होता है। सारा दिन बाबा की याद की खुमारी में कैसे बीत जाता है, पता ही नहीं चलता है। ब्रह्माकुमारी बहन-भाइयों के प्रोत्साहन से हम कैदी भाई पेन्टिंग, ड्राईंग, कविता आदि बनाना सीख गये हैं। जेल से बाहर जाकर मैं निमित्त बन अपने लौकिक परिवार, मित्र-सम्बन्धियों आदि को ज्ञान मार्ग में लाने की सेवा करूँगा।

बाबा ने मुझे अपनी पावन गोद में बिठा लिया है। हमने तो चरणों में जगह माँगी थी पर उस पिता ने दिल में समा लिया है। शुक्रिया सतगुरु बाबा का, लाख-लाख शुक्रिया!

❖

मिथक से सत्य की ओर

ब्रह्माकुमारी गीता, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, शान्तिवन (आबू रोड)

सदियों से एक विचार संसार में फैलता रहा है कि यह जगत मिथ्या है, कारागृह है, असार है, इसका सुख कागविष्ठा समान है, यहाँ सब कुछ बंधनकर्त्ता है, अर्थहीन है। अक्सर जो लोग भक्ति करते हैं, वे भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि हमें भव के फेरे से छुड़ाओ, चौरासी के चक्र से निकालो। इसलिए कई घरबार और देह सम्बन्धों को छोड़ संन्यास ले लेते हैं कि हम ऐसी साधना करेंगे जिससे मोक्ष मिल जाये। जब कभी भी महात्मायें, धर्मात्मायें, योगी-संतजन शरीर छोड़ते हैं तो कहा जाता है कि वे पार निर्वाण चले गये, लौ में लीन हो गये। ऐसा भी माना जाता रहा है कि बारंबार शरीर धारण करना और छोड़ना, यह हमारे ही पापकर्मों की सज़ा है। हम जो कुछ करते हैं उसका धर्मराज के दरबार में चित्रगुप्त के चौपड़े में (बही-खाते में) हिसाब-किताब रखा जाता है और उसके दण्डरूप आत्मा को इस मोह-माया भरे संसार में दुखों को भोगने के लिए भेजा जाता है।

खुदा से नाराजगी

कई लोग संसार के वर्तमान स्वरूप को देख खुदा पर भी नाराज़ हो जाते हैं कि आपने ऐसी दुनिया क्यों बनायी? वे सोचते हैं, संसार यदि अनादि काल से ही सुख-दुख, हार-जीत, दैवी-आसुरी वृत्ति के संघर्ष का खेल रहा है तो ऐसे संसार का क्या अर्थ है? स्पष्ट है, इस प्रकार की सोच रखने वाले जहाँ हैं, वहाँ वे पूरा मन लगाकर जी नहीं पा रहे हैं। अपने जीवन, परिवार, समाज-संसार को सकारात्मक रूप से स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं तथा उसमें कुछ और अच्छा, उत्तम, सुंदर जोड़ नहीं पाते हैं।

जीवन से छूटने की बातें क्यों?

विचार चलता है कि मनुष्यात्मा, जिसे समस्त प्राणीजगत में सर्वश्रेष्ठ बुद्धिशाली कहा जाता है, ही क्यों अपने जीवन और दुनिया से तंग है? परेशान होकर वो ही क्यों जीवघात (खुदकुशी) कर लेता है? और कोई प्राणी तो ऐसा नहीं करता है! जो प्राणी जैसे हैं उसी रूप में रसपूर्वक जी रहे हैं, मनुष्यात्मायें ही क्यों इस संसार में आने से कतराते हैं या सदा के लिए छूट जाना चाहते हैं? एक विचार अनुसार, पशु योनि को भोग-योनि, सज़ा-योनि समझा जाता है और मानव जीवन को दुर्लभ, अनमोल, हीरेतुल्य बताया जाता है। तो ऐसे जीवन से और जहाँ हम जी रहे हैं उस संसार से, सदा-सदा के लिए छूट जाने की, भाग निकलने की बातें क्यों की जाती हैं?

जरूरत है मान्यताओं पर पुनर्विचार की

लगता है, कुछ सूत मूँझा हुआ है। हमें इन बातों पर ग़ौर करके तथ्य निकालना चाहिए, सत्य समझना चाहिए। एक तथ्य यह है कि सुखी व्यक्ति तो जीवन से छूटने की बातें कभी नहीं करते हैं। जो दुखी, असफल होते हैं वे ही कार्यक्षेत्र से छूट जाने की बातें करते हैं। स्पष्ट है कि हम दुखों से छूटना चाहते हैं, न कि दुनिया से। अज्ञानता से मुक्त होना चाहते हैं, यथार्थ ज्ञानी बन जीना चाहते हैं। मानव जीवन प्रभु उपहार है। प्रभु उपहार दुखपूर्ण, बन्धनकर्त्ता कैसे हो सकता है? अवश्य ही मान्यताओं पर, मिथकों पर पुनर्विचार करने की ज़रूरत है। समझदार इन्सान को तो और ही संसार को सुंदर बनाने के पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए।

कुदरत की इस अनुपम रचना – संसार खेल को और शृंगारना चाहिए, समृद्ध, सुखपूर्ण बनाना चाहिए। अगर कोई अवरोध है, रुकावटें हैं तो उन्हें दूर करना चाहिए, न कि उनसे नफरत कर दूर हो जाने की बात करनी चाहिए।

मनुष्य तो चुनौतियों को पार कर सदैव मंजिल पर पहुँचने की ख्वाहिश रखता है। तो हम सबको भी मिलकर

संसार को स्वर्ग बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। सूक्ष्मता से सोचने पर समझ में आता है कि हमारी अज्ञानता (जीवन और जगत सम्बन्धित मूलभूत सत्यों के ज्ञान का अभाव) ही सभी संघर्षों और नकारात्मक भावों का मूल कारण है। इस मूलभूत अज्ञानता को मिटाना है।

सद्‌गुण बनाते हैं स्वर्ग और दुर्गुण नरक

सत्यता यह है कि स्वर्ग कोई ऊपर आसमान में नहीं है, नर्क कोई पाताल में नहीं है। अज्ञान, मिथ्या ज्ञान और देहभानजनित विषय-वासनाओं से हमने ही इस दुनिया को नर्क बना दिया है, अब हमें ही सत्यज्ञान के आधार पर दिव्यगुणों को धारण कर इसे स्वर्ग बनाना है। जैसे, जिस घर-परिवार में सदस्य आपस में मिलजुल कर प्रेम, शुभभावना, सहयोग से रहते हैं और घर में शान्ति, आनंद, सौहार्द का वातावरण बना रहता है तो हम कहते हैं कि इनके घर में तो स्वर्ग है। इसके विपरीत, जिस परिवार में लड़ाई-झगड़ा, निंदा-परचिंतन, अपशब्द होते हैं तो हम कहते हैं कि इनका घर तो नर्क बन गया है। व्यक्ति के सम्बन्ध में भी, जो व्यक्ति शांत-शीतल, मधुरभाषी, सुखदायी होता है तो हम कहते हैं कि यह तो जैसे देवी/देवता है। वहीं अगर कोई गुस्सा, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष करता है तो हम कहते हैं कि यह तो राक्षस है। हमारे इस प्रकार के कथन से स्पष्ट होता है कि सद्‌गुण संसार को स्वर्ग बनाते हैं और दुर्गुण संसार को नर्क बनाते हैं।

पुरानी बनाई नहीं जाती, हो जाती है

कोई भी वस्तु जब बनायी जाती है, नई होती है, समय और प्रकृति के संसर्ग में आकर धीरे-धीरे पुरानी होती जाती है। पुरानी कभी पैदा नहीं की जाती, हो जाती है। इसी प्रकार संसार अपने आदि स्वरूप में सत्य था, श्रेष्ठ था, सुखों से भरपूर था, धीरे-धीरे झूठा, भ्रष्ट और दुखप्रधान बन गया है। हम सभी भी अपने जीवन को, समाज को, समस्त जगत को सुव्यवस्थित, समृद्ध और स्वस्थ देखना चाहते हैं। हमारी यह इच्छा ही सिद्ध करती है कि जरूर हमने कभी ऐसे जीवन, समाज, संसार का अनुभव किया है तब तो फिर पाने की कामना करते हैं। मनुष्यात्मा अपनी हर कृति को सर्वोत्तम बनाना चाहता है तो कुदरत की यह रचना – समस्त कायनात भी अवश्य ही अभूतपूर्व ही है, सिर्फ समय के चक्र को, उसके प्रभाव को समझने की आवश्यकता है।

जगत में हम कुछ सुंदर, सत्य, शुभ बढ़ाकर जाएँ

आइये, हम सब अज्ञान को छोड़, सद्ज्ञान को; दुर्गुणों को छोड़, सद्‌गुणों को; पापकर्मों को छोड़, सत्कर्मों को धारण करें। अगर संसार अभावों, पीड़ाओं से भरा हुआ है, तो भी है तो अपना ही घर, अपना ही संसार। उसको सुंदर, सुखपूर्ण, आनंदमय, स्वस्थ बनाना हमारी ही जिम्मेवारी है। जगत में हम आये हैं तो कुछ सुंदर, सत्य, शुभ बढ़ाकर जायें। कलह-क्लेश, द्वेष न बढ़ायें। हम सूखे, फीके नहीं लेकिन सद्भावनाओं से भीगे-भीगे, हरे-हरे बनकर जीयें। हम फिर-फिर इस सृष्टि रंगमंच पर आते रहें और कुछ सुंदर, शुभ, सत्य, पवित्र उसमें बढ़ाते रहें। दुनिया की फिल्मों में जो एक्टर बनते हैं वे हीरो बनने का लक्ष्य रखते हैं। हम सभी भी इस बृहद् विश्व नाटक में अपनी भूमिका सर्वोत्तम निभाएँ और हीरो बन जायें। केवल वो एक्टर ही संन्यास लेते हैं जो श्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं।

बढ़ाएँ कर्म की गुणवत्ता

उचित तो यह है कि हम अपने कर्म की गुणवत्ता बढ़ायें। महान आत्माओं का, पुण्यात्माओं का, धर्मात्माओं का तो पूरा जीवन त्याग, तपस्या और सेवाकार्य से भरपूर रहता है। संपूर्णता प्राप्त करने के बाद इस कर्मक्षेत्र से सदा के लिए मोक्ष पा लेना तो सर्वथा उचित नहीं लगता है। संपूर्ण बनने पर ही कर्मक्षेत्र पर उतरकर अपनी क्षमताओं को अभिव्यक्त कर संसार को जीने योग्य बनाने की श्रेष्ठ भूमिका अदा करने का समय आता है। जैसे पढ़े-लिखे, होशियार, सफल, कला-कौशलवान व्यक्ति से तो हर कोई श्रेष्ठ, नवीन, सुंदर, कल्याणमय सर्जन की, आयोजन की अपेक्षा रखते हैं। ऐसे

ही महान संतों, ऋषियों, धर्मात्माओं, महात्माओं से तो उत्तम कर्मों की, सुखमय संसार के सर्जन की अपेक्षा की जायेगी, न कि कर्मक्षेत्र से पलायन कर जाने की या सुषुप्त हो जाने की।

संसार को कोसने के बजाए आत्मशक्ति विकसित करें

तो चलें, अब हम सब श्रेष्ठ बनने और बनाने के प्रति अग्रसर हो जाएँ। परमात्मा के सद्ज्ञान और सहजयोग की शक्ति से हम नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदल सकते हैं। जैसे कूड़ा-कचरा भी समझपूर्वक उपयोग में लिया जाए तो वह खाद का काम करता है और सुंदर पेड़-पौधे, फूल-फल उगाने के निमित्त बन सकता है। जीवन में विवेक और आत्मशक्ति का सुंदर विकास हो जाए तो बाकी सब कुछ सुंदर और सुखद बनता जाता है। आवश्यकता है, मिथकों को छोड़ सत्य की ओर जाने की। स्वयं में योग, शान्ति, शुभ धारण करने की, न कि इस संसार को कोसने की या इससे छूट जाने की। ❖

विनम्रता मनुष्य का गहना है

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी (हरियाणा)

एक बार नदी ने समुद्र को बड़े ही गर्वीले शब्दों में कहा, बताओ, पानी के प्रचंड वेग से मैं तुम्हारे लिए क्या बहा कर लाऊँ? तुम चाहो तो मैं पहाड़, मकान, पेड़, पशु, मानव आदि सभी को उखाड़ कर ला सकती हूँ।

समुद्र समझ गया कि नदी को अहंकार आ गया है। उसने कहा, यदि मेरे लिए कुछ लाना ही चाहती हो तो थोड़ी-सी घास उखाड़कर ले आना। समुद्र की बात सुनकर नदी ने कहा, बस, इतनी-सी बात! अभी आपकी सेवा में हाजिर कर देती हूँ। नदी ने अपने पानी का प्रचंड प्रवाह घास को उखाड़ने के लिए लगाया परन्तु घास नहीं उखड़ी। नदी ने हार नहीं मानी और बार-बार प्रयास किया पर घास बार-बार पानी के वेग के सामने झुक जाती और उखड़ने से बच जाती। नदी को सफलता नहीं मिली।

थकी, हारी, निराश नदी समुद्र के पास पहुँची और अपना सिर झुकाकर कहने लगी, मैं मकान, वृक्ष, पहाड़, पशु, मनुष्य आदि बहाकर ला सकती हूँ परन्तु घास उखाड़ कर नहीं ला सकी क्योंकि जब भी मैंने प्रचंड वेग से घास पर प्रहार किया उसने झुक कर अपने आप को बचा लिया और मैं ऊपर से खाली हाथ निकल आई।

नदी की बात सुनकर समुद्र ने मुसकराते हुए कहा, जो कठोर होते हैं वे आसानी से उखड़ जाते हैं लेकिन जिसने घास जैसी विनम्रता सीख ली हो उसे प्रचंड वेग भी नहीं उखाड़ सकता। समुद्र की बात सुनकर नदी का घमण्ड भी चूर-चूर हो गया।

विनम्र अर्थात् जिसमें लचीलापन है, जो आसानी से मुड़ जाता है, वह टूटता नहीं। नम्रता में जीतने की कला है, शौर्य की पराकाष्ठा है। नम्रता में सर्व का सम्मान संचित है। नम्रता हर सफल व्यक्ति का गहना है। नम्रता ही बड़प्पन है। दुनिया में बड़ा होना है तो छोटा होना आना चाहिए। छोटा होने का अर्थ है विनम्रता। संसार को विनम्रता से जीत सकते हैं। ऊँची से ऊँची मंजिल हासिल कर लेने के बाद भी अहंकार से दूर रहकर विनम्र बने रहना चाहिए।

विनम्रता के अभाव में व्यक्ति पद में बड़ा होने पर भी घमण्ड का ऐसा पुतला बन कर रह जाता है जो किसी के भी सम्मान का पात्र नहीं बन पाता। स्थान कोई भी हो, विनम्र व्यक्ति हर जगह सम्मान हासिल करता है। जहाँ विरोध हो वहाँ प्रतिरोध और बल से काम नहीं चल सकता। विनम्रता से ही समस्याओं का हल सम्भव है। विनम्रता के बिना सच्चा स्नेह नहीं पाया जा सकता। जो व्यक्ति अहंकार और वाणी की कठोरता से बचकर रहता है वही दीर्घजीवी बन जाता है। सबकी विशेषताएँ देखो और विशेषताएँ ही वर्णन करो तो हममें भी विशेषताएँ आ जायेंगी। ❖

दिलवाले ने दिया स्वस्थ दिल

ब्रह्माकुमार इन्द्रजीत नाथ, मेघा, आठगढ़, कटक (उड़ीसा)

मेरे शरीर का नाम तो इन्द्रजीत है लेकिन काम, नाम के विपरीत करता आ रहा था। उप-नाम मेरा नाथ है लेकिन सचमुच मैं अनाथ था, मेरा मार्गदर्शक कोई नहीं था। मैं राजा जैसा विलासी जीवन बिता रहा था। प्रबल मांसाहार के साथ सभी प्रकार की शराब मेरे घर में मौजूद रहती थी। यह शराब मुझे पी रही थी। शराब के साथ-साथ मैं चेन स्मोकर भी था। नौकरी से जो तनख्वाह मिलती थी, उसमें से आधी शराब और सिगरेट पीने में चली जाती थी। दिनोंदिन घर में अशान्ति बढ़ती जा रही थी। संगदोष से मेरा सर्वनाश हो रहा था लेकिन मुझे पता नहीं था। मैं इंद्रिय-सुख में मस्त था।

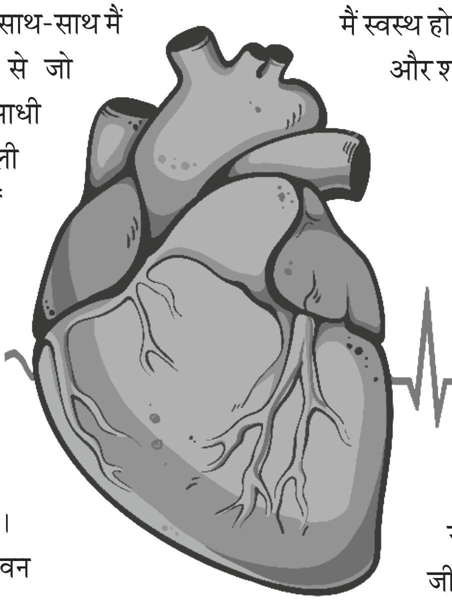

व्यसनों के कारण हृदयाघात

एक दिन ऐसा आया जो मुझे पाप कर्मों का फल भोगना पड़ा। व्यसनों का 35 सालों तक सेवन करने के परिणामस्वरूप 2 दिसम्बर, 2013 को अचानक मुझे हृदयाघात हुआ। खड़े-खड़े टी.वी.देख रहा था, देखते-देखते ही नीचे गिर पड़ा। मेरे चार दांत टूट गये। बेहोश अवस्था में मुझे हॉस्पिटल ले जाया गया। वहाँ ई.सी.जी., इको, टी.एम.टी.आदि किये गये लेकिन रिपोर्ट से कुछ पता नहीं पड़ा। उसके बाद एंजियोग्राफी करने से पता चला कि ज्यादा शराब और सिगरेट पीने के कारण हृदय के अंदर अवरोध हो गये हैं। मुझे तुरन्त बाईपास सर्जरी कराने के लिए कहा गया। फिर साईं हॉस्पिटल, पुट्टपर्ति तथा बैंगलुरू में मेरा इलाज चला। मुझे बाईपास सर्जरी के लिए इन्तजार करने के लिए कहा गया। मेरे कार्यालय सहकर्मी ब्रह्माकुमार अमूल्य भाई (ब्रह्माकुमारी आश्रम के नियमित विद्यार्थी) ने मेरी हालत देखकर उसी समय माउण्ट आबू के कैड (Coronary Artery disease) कार्यक्रम के लिए ऑनलाइन मेरा रेजिस्ट्रेशन करा दिया। मैंने और धर्मपत्नी ने 11-08-2014 से 20-08-2014 तक कैड कार्यक्रम अटैण्ड किया। इससे मुझे नया जीवन मिल गया। मैं स्वस्थ होने लगा। राजयोग के अभ्यास से सिगरेट और शराब से मुझे छुटकारा मिल गया।

लाखों के खर्चे से बच गया

डॉ.सतीष गुप्ता जी के मार्गदर्शन से रोज अमृतवेले शक्तिशाली योग करना, मुरली सुनना, आत्म अभिमानी स्थिति का अनुभव करना, शाकाहारी भोजन लेना, पवित्रता (ब्रह्मचर्य व्रत) का पालना करना, रात को चार्ट लिखना और बाबा को पत्र लिखना – ये ईश्वरीय नियम जीवन में पक्के हो गए। मैं पक्का राजयोगी बन गया। मेरे जीवन में ऐसा परिवर्तन देखकर अन्य बहुत सारे लोग भी ज्ञान में आ गये। मेरे जैसा विकारी, शराबी बदल सकता है, यह देखकर हमारे इलाके में हलचल मच गई। लोगों ने कहा, यह ब्रह्माकुमारियों का जादू है जो दानव को देव बना सकती हैं। अब मैं पूरी तरह से स्वस्थ हूँ। मैंने बाईपास सर्जरी से छुटकारा पाया और लाखों के खर्चे से भी बच गया। मैं डॉ.सतीश गुप्ता जी तथा शिव बाबा का आभारी हूँ जो मेरे को दल-दल से निकाल नया जीवन दे दिया। दिलवाले बाबा ने मेरे दिल को पूर्ण स्वस्थ कर दिया।

मैं इस लेख के द्वारा यह बताना चाहता हूँ कि मेरी तरह सिगरेट और शराब का बदअभ्यासी कोई न बने। सुख-शान्ति सम्पन्न जीवन जीना है तो राजयोग की साधना करें। ❖

योग द्वारा सशक्त धारणाओं का निर्माण

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम

दुनिया में सकारात्मक चिंतन की अलग-अलग बहुत सी तकनीक बताई गई हैं। हम सकारात्मक संकल्प तो निर्मित कर लेते हैं लेकिन उसमें ताकत नहीं होती क्योंकि हम शायद खुद अंदर से उसके साकार होने के बारे में विश्वस्त नहीं होते। मैं एक सकारात्मक संकल्प करूँगी कि यह काम हो जायेगा लेकिन साथ-साथ अंदर मुझे शक भी है कि मेरे को नहीं लगता कि ये कार्य हो पायेगा, फिर डर भी है कि अगर नहीं हुआ तो...। फिर तो समझ लो कि उस सकारात्मक संकल्प का कोई प्रभाव होने वाला नहीं है क्योंकि उस एक सकारात्मक संकल्प के पीछे बहुत सारे नकारात्मक संकल्प हैं। ऐसा सकारात्मक संकल्प कमजोर संकल्प है इसलिए बहुत जल्दी वह नकारात्मक संकल्प का अनुसरण करने लगता है।

योग गहरे जमे हुए संस्कार, गहरी अवधारणाओं को बदल देता है। इसमें हम संकल्प के स्तर पर काम नहीं करते बल्कि उससे भी एक कदम पीछे जाकर अपने संस्कार पर काम करते हैं क्योंकि जिस प्रकार का संस्कार, उसी प्रकार की ही सोच निर्मित होने वाली है।

हमारे आस-पास के लोग कुछ भी कर रहे हैं, हम उनको स्वीकार करें, गुस्सा न करें, प्यार से रहें, शांत रहें लेकिन यह सहज नहीं लगता है। अपने ऊपर मेहनत नहीं करते हैं तो अचानक ही अंदर से एक दिन विस्फोट हो जाता है। हमारे अच्छे प्रयास का यह परिणाम तुरंत तो नहीं मिलेगा कि सामने वाला बदल जाये या कार्यालय में सब एकदम प्यार से काम करने लग जायें इसलिए हमारी यात्रा रुक जाती है और हमारी पुरानी अवधारणायें तो तैयार पड़ी हैं, उनको वापिस आना मुश्किल नहीं होता। इसमें हमारा बहुत ज्यादा नुकसान हो जाता है। हम जीवन-यात्रा पर चल रहे हैं, इसलिए ईंधन (शक्ति) भरना भी बहुत जरूरी है। उसके लिए जब हम सुबह के समय मौन में बैठते हैं तो अंदर की प्राथमिक जटिलताओं का समाधान करने का सोचें। फिर जो बाहर के विरोधाभास हैं वो तो अपने-आप ही सुलझ जायेंगे, उन पर मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

प्रारंभ में सुबह के समय 5 मिनट या 10 मिनट का समय योग के लिए रख सकते हैं फिर धीरे-धीरे समय बढ़ाते जायें। मन में संकल्प की गति को थोड़ा मौन करने में ही 5-10 मिनट निकल जाते हैं इसलिए थोड़ा-सा समय ज्यादा दें। अपनी सोच को रोकने की कोशिश नहीं करें लेकिन अपने आप पर ध्यान दें कि मैं दूसरे प्रकार के विचार भी निर्मित कर सकता हूँ। आप देखेंगे कि विचार तो आयेंगे, यदि आप उन पर ध्यान नहीं देंगे तो वे अपने-आप ही धीरे-धीरे खत्म हो जायेंगे। यदि आप उस विचार में ही उलझ गये कि 'कल उन्होंने ऐसा कहा था' फिर तो आपका सारा काम ही खत्म हो जायेगा। हमें ध्यान यह रखना है कि मुझे उत्पन्न क्या करना है।

मान लो हमने एक संकल्प निर्मित किया 'मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, शान्ति मेरा अपना स्वभाव है।' इसे हम सिर्फ संकल्प स्तर पर निर्मित करते हैं तो उतना एकाग्र नहीं हो पाते लेकिन जिस चीज का हम ध्यान करेंगे वो हमारी अनुभूति में भी आने लगती है। फिर उसको पूरा करना आसान हो जाता है। अब वो दृश्य ले आओ कि कौन-सी परिस्थिति में हम क्रुद्ध होते थे और अब दृश्य निर्मित करो कि वही कम्प्यूटर है, वही लोग हैं लेकिन हम शांत हैं। अपने आपको शांत स्वरूप में देखो। अब यह अनुभव करो कि यह शांति मेरे स्वरूप में ही आ जायेगी तो जीवन कैसा होगा। यह लक्ष्य निर्धारण है, इस लक्ष्य को पक्का करें और फिर उसको नियमित करके मन में व्यवस्थित कर दें तो फिर वह सारा दिन चलना शुरू हो जायेगा।

हमारा चेतन मन रोजमर्रा के संकल्प करता है। जब ये धीरे-धीरे बंद हो जाते हैं तब हम अवचेतन मन पर आ जाते

हैं। अवचेतन मन आधार है जहाँ हमारे गहरे संकल्प बैठे हुए हैं। उस मौन की अवस्था में हम जो बीज बोयेंगे, जो संकल्प करेंगे वो आधार (नींव) में जाकर बैठ जायेगा। आप हर दिन अपने साथ बैठें और अपने-आपसे बातें करें कि हरेक जो कर रहा है, अपने अनुसार सही कर रहा है। वो अपनी क्षमता, अपनी गति, अपनी सही और गलत की परिभाषा से काम कर रहा है। मैं उसको स्वीकार कर सकती हूँ लेकिन हमारी अपेक्षा हर एक से पूरी नहीं हो सकती है। बहुत गहराई से शांत मन में ये डालना है। हम अपने मन में जो अवधारणा डाल देंगे, मन उसी पर दिनभर कार्य करता रहता है। एक दिन नई अवधारणा को लेकर चलेंगे तो सारे दिन में उसका परिणाम दिखाई देगा, वो परिणाम प्रेरणा देगा। थोड़े दिन में महसूस करेंगे कि नई अवधारणा मजबूत होती जा रही है। ❖

खोए हुए रुपये सहज ही वापस मिले

ब्रह्माकुमारी गुलायची बहन, वसई (मुम्बई)

मैं पिछले 25 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में चल रही हूँ। पढ़ी-लिखी नहीं हूँ पर शिव बाबा के सेवाकेन्द्र की सेवा करने में मुझे बहुत खुशी मिलती है। मुरली प्रतिदिन सुनती हूँ और बाबा के साथ के अनुभव करती रहती हूँ।

एक सद्‌गुरुवार को मैं बस में बैठकर सेवाकेन्द्र से घर जा रही थी। बस में बैठे-बैठे मेरे मोबाइल की घन्टी बजी। पर्स से मोबाइल निकालने लगी तो 2000 रुपये वाले दो नोट, जो मेरे बेटे ने बिल भरने के लिए दिये थे, मेरी गोद में गिर गए। मुझे उस समय तो पता नहीं चला पर जब मेरा स्टॉप आया और मैं उठी तो वो नोट उड़कर मेरी आँखों के सामने बस के नीचे रास्ते में बिखर गये। मैं बस से उतरकर ढूँढ़ने के लिए उसी रास्ते पर वापस गयी पर मुझे नहीं मिले। मन में थोड़े विचार चले कि बेटा क्या कहेगा... पर मैंने बाबा को याद किया और घर चली आई। दिनभर मन में बार-बार वही विचार आते रहे। बेटे को जब पता चला तो उसने कहा, माँ, जाने दो, सोचो मत। दूसरे दिन सुबह सेवाकेन्द्र पर गयी तो बहन जी को सुनाया। बहन जी ने कहा, 'गुलायची बहन, आप बाबा के हो, पैसे आपके नहीं, बाबा के हैं, बाबा देखेगा, आपका कोई हिसाब होगा, भूल जाओ।' फिर मैंने उस बात को सोचना छोड़ दिया।

सात दिन बाद फिर मैं बस से घर जा रही थी। मेरी बाजू में बैठे हुए एक भाई का पर्स गिर गया। मैंने तुरंत कहा, 'भाई संभालकर रखना, ऐसे ही मेरे भी 4000 रुपये बस से गिर चुके हैं, संभालना।' यह बात बाजू की सीट पर बैठे हुए एक अन्य भाई ने सुन ली। उसने तुरन्त मुझसे पूछा, आपके रुपये गुरुवार को गिरे थे क्या? मैंने 'हाँ' कहा। उसने पूछा, 2000 वाले दो नोट थे? मैंने 'हाँ' कहा। इतने में मेरा स्टॉप आ गया। मैं उठकर खड़ी हो गई। वह भाई भी उठा और 2000 वाले दो नोट मेरे हाथ में देते हुए बताने लगा, पिछले गुरुवार को इसी रास्ते से मैं डॉक्टर के पास जा रहा था। ये रुपये उड़कर मेरे पैर के पास आये। मैंने सोचा, डॉक्टर को दे देता हूँ परन्तु जैसे कोई मुझे रोक रहा था, 'ये पैसे खर्च मत करना और चार दिन से रोज सपने में आवाज आ रही थी, कालोनी में एक माता रहती है, वो ब्रह्माकुमारी है, ये रुपये उसके हैं, उसे लौटा देना, खर्च मत करना।' तबसे मैं ये रुपये लेकर आपको ढूँढ़ रहा हूँ – ये कहते हुए रुपये मुझे देकर वो उतर गया।

बस में सब हमारी ओर देख रहे थे। रुपये मिलने की खुशी से भी ज्यादा खुशी मुझे इस बात की हुई कि मेरा बाबा, मेरा कितना ध्यान रखता है। छोटी-छोटी बातों में भी वो मेरा मददगार बनकर सदा साथ निभाता है। ❖

15 सितम्बर ''इंजीनियर्स'' डे पर विशेष

तकनीक के साथ मूल्यों को भी जोड़ें

ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, बहल (हरियाणा)

हम सब जानते हैं कि विमान बनाना या बहुमंजिली इमारत बनाना, इसमें किसी देश की वर्षों की तकनीक, बुद्धि का कौशल, मेहनत और पैसा प्रयोग होता है लेकिन उस विमान को बहुमंजिली इमारत से टकरा कर, विमान और इमारत दोनों को ध्वस्त कर देने में तो पल भर का समय लगता है। बड़े शहरों को विकसित और आबाद करना – इसमें सदियाँ लग जाती हैं लेकिन बम गिराने की कुत्सित भावना सेकण्ड में उन्हें श्मशान में बदल देती है।

इसलिए जहाँ हम कौशल (Skill) विकसित करने की, अच्छे इंजीनियर तैयार करने की, अधिक कॉलेज खोलने की और शोध कार्य के लिए लैब (प्रयोगशाला) बनाने की बात करते हैं वहाँ हमें ऐसी शिक्षा देने की राहें भी तलाशनी होंगी जो मनुष्य के मन में उपजी प्रतिशोध, क्रोध, ईर्ष्या इत्यादि की भावना को समाप्त कर सकें। विद्यार्थियों को मानव मन में उठने वाले आवेगों पर शोध और नियन्त्रण करना भी सिखाया जाए ताकि वर्षों की उपलब्धि क्षणिक आवेग में ध्वस्त न जो जाए।

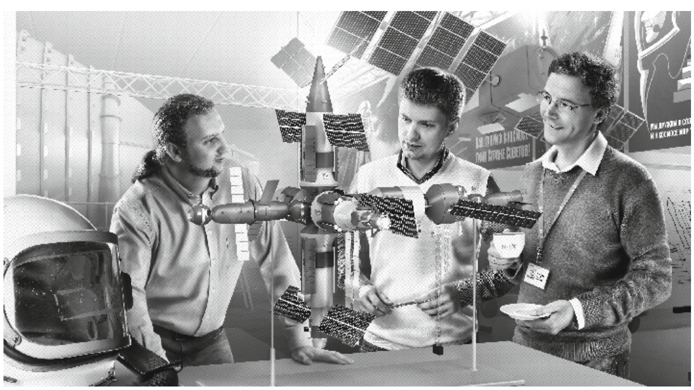

जैसे फसल को कीड़े, लकड़ी को दीमक, शरीर को कीटाणु और कम्प्यूटर को वायरस खा जाता है ऐसे ही मानव की बुद्धि जिसमें कला-कौशल और सद्गुण हैं उसे वाइसिज (VICES) नष्ट कर देते हैं। यदि पुल उद्घाटन से पहले ही टूटा और टैंक पानी भरने से पहले ही बिखर गया तो किस कमी से? देश में सीमेन्ट, भवन निर्माण सामग्री और तकनीक की कमी नहीं है लेकिन ईमानदारी (Honesty) की कमी से टूटा। आज देश में इंजीनियर्स की कमी नहीं है लेकिन विश्व नव-निर्माण के लिए देश को केवल इंजीनियर्स नहीं बल्कि वैल्यू बेस्ड इंजीनीयर्स की आवश्यकता है। निर्माण सामग्री कितनी भी बढ़िया हो लेकिन विचारों की श्रेणी घटिया होगी तो उत्पाद गुणवत्ता वाला कैसे होगा?

आज जो भी सुख के साधन – भवन, वायुयान आदि धरा पर हैं, वे इससे पहले कागज पर थे और उसके भी पहले मानव के मन में थे। जो चीज विचारों में है वही कौशल के जरिए धरा पर आती है। यदि विचारों में इस प्रकार की मिलावट आ गई कि इतना हिस्सा मेरी जेब में आना ही चाहिए तो कोई भी चीज गुणवत्ता की कसौटी पर पूरी तरह 100 प्रतिशत खरी कैसे उतरेगी? सार्वजनिक उपक्रम की इकाई में प्रयोग होकर जिस पैसे का लाभ सारे देश के लोगों को मिलता, उस पैसे का कुछ हिस्सा एक व्यक्ति की छोटी सोच के कारण उसके परिवार के मात्र 5-7 सदस्यों को ही मिल पाता है।

महान इंजीनियर सर मोक्षगुन्डम् विश्वेश्वरय्या हुए, उनकी महानता केवल उनके कौशल और तकनीक से नहीं बल्कि उनमें मौजूद मूल्यों से थी। उनमें से एक मूल्य यह था कि वे शुद्ध शाकाहारी थे। पूछा जा सकता है कि तकनीक के विकास में

शाकाहार का क्या रोल है? ब्रह्मचर्य, शुद्ध शाकाहारी भोजन, सत्य और अहिंसा – ये वे मूल्य हैं जिनसे व्यक्ति के अन्दर निर्भयता, मनोबल, कर्त्तव्यपालन में ईमानदारी और अपने ध्येय पर अडिग रहने की शक्ति आती है। इन्हीं सद्गुणों के आधार पर ही हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में गरिमामयी सफलता प्राप्त करते हैं। इसलिए देश को तकनीक व कौशल से समृद्ध बनाने के लिए मूल्य रूपी सीमेन्ट बहुत जरूरी है। मूल्यों के बिना तकनीक मात्र एक ढाँचा बन कर रह जायेगी।

तकनीक के ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान, कर्मों की गहन गति के ज्ञान की भी आवश्यकता है ताकि व्यक्ति का बन्द पड़ा तीसरा नेत्र खुले और उसे यह अहसास हो जाए कि नाजायज तरीके से आया हुआ एक पैसा भी ब्याज सहित अवश्य ही वापस लौटाना पड़ेगा। जितना आनन्द व खुशी उस पैसे के प्राप्त होने पर नहीं मिले होंगे, जितना कि दुख व पश्चाताप उसे लौटाने में झेलना पड़ेगा। अतः गरीब, अमीर, अनपढ़ या शिक्षित, राजा या नौकर, अधिकारी या चपरासी सबको कर्मों की गहन गति का विज्ञान समझना आवश्यक है और वह उतना ही आवश्यक है जितना शरीर के लिए आक्सीजन, जल, रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य। ❖

आश्चर्य! जानवर जैसे-से बना इन्सान-जैसा

ब्रह्माकुमार शान्तलिंग अडेप्पा काले, बिदर (कर्नाटक)

मेरा जन्म एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। दोस्तों की गलत संगत में आकर गलत रास्ते पर चला गया। पिताजी ने एक जाने-माने स्कूल में पढ़ाई के लिए दाखिला करवाया परन्तु एक दिन भी स्कूल में नहीं गया। बाद में गृहस्थी चलाने के लिए घासलेट (मिट्टी का तेल) बेचने के लिए गली-गली फिरता था। वहाँ भी ठीक से निभा नहीं पाया। आवारागर्दी करते हुए जुआ खेलना शुरू किया। उसके लिए चोरी-चकारी भी की। कुसंग में शराब, गांजा पीने की आदत लग गई। मांसाहार के बगैर नहीं रहता था। घरवालों ने छुड़ाने के लिए बहुत प्रयत्न किये पर कुछ भी फायदा नहीं हुआ। मैं एक माना हुआ गुन्डा बन गया। हर जगह दादागिरी और झगड़ा किये बगैर चैन नहीं पड़ता था। महीने-दो महीने में पुलिस केस हो जाना और जेल जाना, यह आम बात हो गयी थी। जेल में भी बहुत झगड़ा करता था। हिन्दू धर्म पर बहुत आस्था तब भी थी, आज भी है। जातीय झगड़ों में भाग लेना रुचि की बात थी। पुलिस की हिट लिस्ट में भी था।

हमारा बेटा सुधर जाये, इस उद्देश्य से माँ-बाप ने शादी की परन्तु मेरा आवारापन नहीं गया। तीन बच्चे हो गये फिर भी नहीं सुधरा। माँ-बाप ने अलग कर दिया ताकि घर की जिम्मेवारी पड़े और सुधरे। मैंने यातायात का कारोबार शुरू किया पर गुन्डागर्दी नहीं छुटी।

महाशिवरात्रि पर्व पर, 2014 में बिदर के गांधीगंज में ब्रह्माकुमारीज का कार्यक्रम चल रहा था। मैं शराब पीकर उस कार्यक्रम में आ बैठा। नशे में ही बहनों के प्रवचन सुने। उन्हें सुनकर और वहाँ का वातावरण देखकर मेरी आँखें खुल गयीं। उस दिन से मैंने शराब की बोतल फोड़ दी और वचन ले लिया कि आज से शराब बन्द कर दूँगा। इसके बाद बिदर के पावन धाम सेवाकेन्द्र में आकर सात दिन का ज्ञान का निःशुल्क कोर्स किया। तभी से आवारागर्दी, गुन्डागर्दी, गांजा, शराब, बीड़ी, सिगरेट सब छूट गये।

तब से मैं नियमित मुरली सुनने सेवाकेन्द्र जाता हूँ। थोड़ी-बहुत पढ़ भी लेता हूँ। सेवाकेन्द्र पर सेवा के लिए भी जाता हूँ। योग-कक्षा में नियमित जाता हूँ और योग करता हूँ। मेरे इस परिवर्तन से परिवार के लोग, रिश्तेदार, मित्र-सम्बन्धी, गली वाले और पूरे पुलिस स्टेशन वाले भी बहुत हैरान हुये कि यह जानवर, कैसे इन्सान बन गया।

बाबा ने मुझे शान्तिया से शान्तलिंगप्पा बना दिया है। बाबा आपने कमाल कर दिया, आपका यह अहसान कभी नहीं भूलूँगा। अब मुझे बाबा की बातों के सिवाय दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। अभी भी और बहुत कुछ है मेरे अन्दर सुधार के लिए। आशा है कि पूरा सुधर जाऊँगा और प्रयत्न करूँगा दूसरों को भी सुधारने का।

❖

त्याग व सेवा की मूरत माता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

इस असार संसार में कुछ भी निश्चित नहीं है, अगर कुछ निश्चित है तो वह है माँ का बिना शर्त का प्रेम। किसी लेखक के पेन या चित्रकार के ब्रश में इतनी ताकत नहीं जो वह माँ के सच्चे समर्पित प्रेम का 50 प्रतिशत भी वर्णन कर सके। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ईश्वरीय प्रेम को छोड़ कर दूसरा कोई प्रेम मातृप्रेम से श्रेष्ठ नहीं है। जवानी ढल जाती है, प्रेम कम हो जाता है, मित्रता के पत्ते मुरझा कर गिर जाते हैं परन्तु माँ की आशाएं व गुप्त प्रेम वैसा का वैसा बना रह कर इन सबको पीछे छोड़ जाता है। सन्तान कभी माँ की कितनी भी बड़ी अवमानना क्यों न कर दे, उसे विचलित कर दे, फिर भी माँ का उससे प्रेम गुप्त रूप से बना रहता है। माँ कितनी भी बूढ़ी क्यों न हो जाए, उसकी ममता, सन्तान के प्रति उसकी शुभ-भावना कभी बूढ़ी नहीं होती, चाहे सन्तान नालायक ही क्यों न हो। बुढ़ापे में यदि पति की मृत्यु पहले हो जाए, तो पत्नी का जीवन कष्टमय हो जाता है। एक माँ चार बच्चों को पाल-पोष कर बड़ा कर देती है परन्तु वही चार बालिग अपनी बूढ़ी माँ की सेवा करने से कतराते हैं। बचपन में छोटे-छोटे भाई आपस में लड़ते हैं कि माँ मेरी है, माँ मेरी है। बड़े हो जाने के बाद भाई लड़ते हैं कि माँ तेरी है, माँ तेरी है (माँ को तुम रखो)। छोटे बच्चे मन से बड़े होते हैं और बच्चे बड़े हो कर मन से छोटे हो जाते हैं।

आनाथाश्रमों से ज्यादा हैं वृद्धाश्रम

एक छोटा बच्चा रो-रोकर अपनी बात माँ से मनवा लेता है। वही बच्चा बड़ा होकर माँ-बाप को रुला-रुला कर अपनी बातें मनवा लेता है, चाहे मकान अपने नाम करवाना हो, बैंक में बाप के खाते में अपना नाम जुड़वाना हो या माँ-बाप को वृद्धाश्रम में भेजना हो। यही कारण है कि आज वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि हो रही है और संयुक्त परिवार समाप्त हो रहे हैं। आज अनाथाश्रमों से ज्यादा तो वृद्धाश्रम हो गए हैं। अनाथाश्रम में वो बच्चे पलते हैं जिनके माँ-बाप नहीं रहे परन्तु वृद्धाश्रम में वो माँ-बाप पलते हैं जिनकी औलाद में सुसंस्कार व कर्त्तव्यपरायणता नहीं रही। वृद्धाश्रम में जब बूढ़ी और लाचार माँ से पूछा जाता है कि आपका बेटा क्या करता है, तो उसका जवाब होता है, डॉक्टर है या मजिस्ट्रेट है या इंजीनियर है या ऑफिसर है या प्रोफेसर है आदि। एक भी माता ऐसी नहीं मिलती जो कहे कि मेरा बेटा गरीब है या अनपढ़ है। गरीब व अनपढ़ सन्तान कभी भी अपने माँ-बाप को वृद्धाश्रम नहीं जाने देते। यह पापाचार तो पढ़े-लिखे कमाऊ पूत ही करना पसन्द करते हैं। एक समय था कि गृहस्थ यह कहते हुए गर्व महसूस करता था कि मै माँ के साथ रहता हूँ, फिर यह कहते सुना जाने लगा कि माँ मेरे साथ रहती है परन्तु आज माँ को वृद्धाश्रम में जाने पर मजबूर करने वाला गृहस्थ अपनी प्रतिष्ठा बचाने हेतु यह कहता है कि मेरी माँ तीर्थ करने गई है या उस का यहाँ मन नहीं लगता इसलिए फलाने के पास रहती है।

भगवान का बच्चा और मेरा बच्चा

आज की पीढ़ी अपनी सगी माँ को भी गैर बना रही है परन्तु एक माँ किसी गैर के बच्चे को भी सगे से बढ़ कर प्यार कर सकती है। विनोबा भावे की माँ ऐसी ही माँ थी। एक बार उसके पड़ोस के युगल को 3-4 दिन के लिए अचानक बाहर जाना पड़ा। वे अपने 5 साल के बच्चे को विनोबा की माँ के सुपुर्द कर गए। नन्हें विनोबा ने देखा कि माँ उस पड़ोसी बच्चे को भोजन में घी लगा कर रोटी देती है और मुझे सूखी रोटी। एकान्त में विनोबा ने माँ से यह शिकायत की तो माँ बोली कि बेटा, घी जरा-सा ही है। वह तो भगवान का बच्चा है लेकिन तू तो मेरा बच्चा है, बता मैं क्या करूँ? विनोबा खुश हो गया और बोला, माँ, भगवान के बच्चे को किसी भी बात की कमी नहीं होनी चाहिए। विनोबा के लिए उसकी माँ ही भगवान थी और माँ जैसे रखे, उसी में वह राजी था।

कभी विमुख नहीं होती माँ

माँ को सबकी पसन्द का ध्यान रहता है परन्तु माँ को खाने में क्या पसन्द है, इसका किसी को पता भी नहीं होता। माँ अन्न का सम्मान करती है और पति व बच्चों के द्वारा छोड़ा गया भोजन भी खा लेती है। वह परिवार की समृद्धि व सुख-शान्ति के लिए अक्सर उपवास रखती है और भूखे रहते हुए भी घर के सारे काम अन्य दिनों की तरह करती रहती है। घर में सबसे अन्त में भोजन करने वाली माँ ही होती है। वह सबको पूछ-पूछ कर भोजन कराती है परन्तु भोजन करते हुए उसे क्या चाहिए, यह शायद ही कोई पूछता है। माँ जब देखती है कि भोजन करने वाले पाँच हैं और भोजन चार का है, तो अक्सर कह देती है कि आज उसे भूख नहीं। कई बार उसकी इस बात को दूसरे समझ नहीं पाते जबकि माँ उस बात को भी समझ लेती है, जिसे बच्चा या उसका पति कहना नहीं चाहता। यह माँ है जो बच्चे की गलती भी अपने ऊपर लेकर बच्चे को पिता की डांट से बचाती है। यदि बच्चा बीमार है तो माँ रात भर जग कर भी सेवा करती है। पिता अपने बच्चे को त्याग सकता है, भाई-बहन एक-दूसरे से नाता तोड़ सकते हैं, पति-पत्नी एक-दूसरे को तलाक दे सकते हैं परन्तु माँ अपने बच्चे से कभी विमुख नहीं होती। वयस्क हो रही बेटी का सही मार्गदर्शन माँ के अलावा और कोई नहीं कर सकता। माँ अपनी बेटी के सम्बन्ध-सम्पर्क में आ रहे व्यक्तियों की जागरुकता से निगरानी रखती है।

अपने से पहले सन्तान के प्रति सोच

प्रसिद्ध हॉलिवुड अभिनेत्री सोफिया लॉरेन के अनुसार, जब आप माँ बनती हो तो आप संकल्पों में कभी अकेली नहीं होती। आप अपने लिए कुछ भी सोचने के पहले अपनी सन्तान के लिए सोचती हो। नार्वे की सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती सिग्रिड अनसेट को जब नोबेल पुरस्कार दिए जाने की घोषणा हुई तो कई पत्रकार उनके घर पर साक्षात्कार (Interview) लेने के लिए पहुंचे। श्रीमती अनसेट बाहर निकलीं और विनम्रता से बोलीं, अभी रात्रि में आप लोगों के यहाँ आने का कारण मैं समझ सकती हूँ क्योंकि अभी-अभी तार द्वारा मुझे नोबेल पुरस्कार दिये जाने की सूचना मिली है पर खेद है कि मैं आप लोगों से इस समय कोई बातचीत नहीं कर सकती। सारे पत्रकार बोल पड़े, क्यों भला? वह बोली, अभी मेरे बच्चों के सोने का समय है और मैं उन्हें सुला रही हूँ। पुरस्कार मिलने की खुशी तो मुझे है पर उससे भी अधिक खुशी मुझे अपने बच्चों के साथ रहने और उनकी सेवा करने में मिलती है। उस माँ की सन्तान के प्रति सेवा व स्नेह की गरिमा से पत्रकार अभिभूत हो गए और खाली हाथ लौट गये।

पहला प्यार–ईश्वरीय प्यार

दुनिया कहती है कि पहला प्यार कभी भी भूलता नहीं है। फिर माँ का पहला प्यार भुला कर दुनिया कैसे प्रेमी या प्रेमिका के प्यार को पहला मान लेती है ? देखा जाये तो सन्तान को मिल रहा माँ का प्यार भी पहला प्यार नहीं। पहला प्यार तो सभी प्राणियों को ईश्वर से प्राप्त होता है। जन्म लेते ही उन्हें जीवन जीने के सारे साधन प्रकृति द्वारा उपलब्ध करा दिये जाते हैं। ब्रह्मलोक का वासी शिव सुपर-माँ है जो कल्प-कल्प ब्रह्मा के शरीर का आधार ले कर अपने बच्चों को पतित से पावन बना कर पावनधाम सतयुग में भेज देता है। लौकिक परिवार में सन्तान को माँ का नाम, गोत्र या वंश नहीं मिलता बल्कि पिता का मिलता है परन्तु जब परमपिता शिव आकर रचना रचते हैं तो बच्चों को शिवकुमार-शिवकुमारी का नाम न दे कर ब्रह्मा को आगे कर देते हैं। बच्चे ब्रह्मा-मुखवंशावली कहलाते हैं। उनका नाम ब्रह्माकुमारी या ब्रह्माकुमार के संबोधन के साथ पुकारा जाता है, जो कि सर्वोच्च सम्मान की बात है।

क्रमशः

बच्चे करते हैं अनुकरण मात-पिता का

ब्रह्माकुमार सत्यम, रादौर (हरियाणा)

दुनिया में प्रत्येक माता-पिता का यही सपना होता है कि उनकी सन्तान सुयोग्य, सुशिक्षित, संस्कारी व आज्ञाकारी हो। इसके लिए उनका सदा यही प्रयास रहता है कि वे अपने बच्चों को श्रेष्ठ संस्कारों की पूँजी ही विरासत में दें। नि:संदेह दुनिया में अगर परमपिता परमात्मा के पश्चात् किसी का स्थान है तो वह माता-पिता का ही है। माता-पिता के प्यार, त्याग और पालना को कोई भी शब्दों में बयान नहीं कर सकता लेकिन आजकल बच्चे माता-पिता के सपने पूरे करने में सक्षम नहीं हो पा रहे, कारण क्या है?

माता-पिता पूछें स्वयं से एक सवाल

मेरा सर्व माताओं-पिताओं से विनम्र निवेदन है कि एक बार सच्चे दिल से स्वयं से पूछें, हम जैसा अपने बच्चों को बनाना चाहते हैं, क्या हम स्वयं वैसे हैं? माता-पिता चाहते हैं कि उनकी सन्तान सदा सत्य बोले पर वे स्वयं से पूछें, क्या हम स्वयं सदा सत्य की राह पर चलते हैं? माता-पिता बच्चों के आदर्श होते हैं। बच्चे यह नहीं समझ पाते कि माता-पिता उनसे क्या चाहते हैं परन्तु माता-पिता जो करते हैं, बच्चे फालो अवश्य करते हैं।

बनें अच्छे इन्सान

मैं कहीं भी जाता हूँ – चाहे स्कूल में, सम्बन्धियों के पास, दोस्तों के पास, सभी मेरे शान्त स्वभाव और अनुशासन से बेहद प्रभावित होते हैं। दिल की गहराइयों से मैं इसका श्रेय परमपिता परमात्मा व अपने माता-पिता को देता हूँ। मेरी मम्मा सदा यही कहती हैं, आप भले ही एक अच्छे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर...न बनें पर एक अच्छे इन्सान अवश्य बनें। इसके लिए उन्होंने मेरा दाखिला, जब मैं मात्र ढाई वर्ष का था, एक अद्भुत विद्यालय में करवाया जिसका नाम है, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। यहाँ नैतिक मूल्यों व राजयोग की शिक्षा हर आयु के बच्चों को नि:शुल्क दी जाती है। इस विद्यालय में दो वर्ष का बच्चा भी जा सकता है तो 80 वर्ष का भी क्योंकि परमपिता परमात्मा तो सबके पिता हैं। वहाँ मैं प्रतिदिन मात्र एक घण्टा सहज राजयोग की शिक्षा लेता हूँ।

एक घन्टे के बदले अमूल्य प्राप्तियाँ

मेरी मम्मा कहती हैं, अपने बच्चों को अच्छा इन्सान बनाने के लिए मुझे भी तो अच्छा बनना होगा। इसलिए वे भी मेरे साथ प्रतिदिन सुबह, मेरे स्कूल के समय से एक घण्टा पहले, इस विश्व विद्यालय में जाती हैं। आयु छोटी होने की वजह से शुरू में मुझे भले ही ज्ञान समझ में नहीं आता था पर वहाँ का सात्विक और दिव्य वातावरण बेहद प्रभावित करता था। धीरे-धीरे ज्ञान की सभी बातें मुझे अच्छी तरह समझ में आने लगीं और प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करने से ज्ञान को स्वयं में धारण करने की शक्ति आने लगी। मैं कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि प्रतिदिन मात्र एक घण्टा देने से मुझे जिन्दगी के हर क्षेत्र में इतनी अधिक अमूल्य प्राप्तियाँ होंगी।

स्वयं को समय देने के फायदे

वास्तविकता तो यह है कि आज हम भौतिक साधनों, सुविधाओं के पीछे इतने अधिक दौड़ रहे हैं कि हमारे पास स्वयं के लिए समय ही नहीं है। इसी वजह से सच्चा सुख कहीं खो गया है। अगर माता-पिता चाहते हैं कि हम बच्चों को नैतिक मूल्य विरासत में दें तो कुछ पाने के लिए कुछ खोना तो पड़ेगा ही! पर इतनी बड़ी प्राप्ति के लिए अगर अपने व्यस्त समय में से मात्र एक घण्टे का समय निकालने

की कीमत देनी पड़े तो यह कितनी छोटी-सी कीमत है। जब हम आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की ओर अग्रसर होते हैं तो हम स्वयं के लिए समय देते हैं जिससे स्वयं की कमी, कमजोरियों को जान पाते हैं। हमारा सम्बध परमपिता परमात्मा से जुड़ जाता है, जो गुण व शक्तियों के सागर हैं। इससे हमारे अन्दर भी गुण व शक्तियाँ आने लगती हैं। जब हम स्वयं गुणों से भरपूर होंगे तो दूसरों तक वे अपने आप पहुँच जाएँगे।

मेरे पास मेरा अपना कुछ भी नहीं है, सब परमपिता परमात्मा निराकार शिव बाबा का दिया हुआ है इसलिए जब भी कोई मेरे किसी भी गुण की तारीफ करता है तो मेरे नयन परमात्मा के प्यार से भर जाते हैं। मैं तहेदिल से चाहता हूँ कि सब उस गुणों के, प्यार के सागर से भरपूर हों। अनुभव लिखने का मेरा लक्ष्य भी यही है कि सब परमपिता परमात्मा के नि:स्वार्थ प्यार के अनुभवी बनें। उनके गुण व शक्तियों के अधिकारी बनें। ❖

श्रद्धांजलि

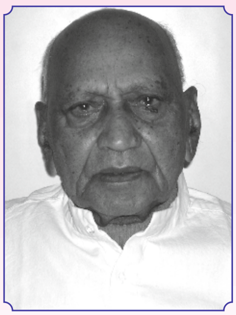

प्यारे बापदादा के अति लाडले, समर्पित बुद्धि, यज्ञ स्नेही वामन भाई, ज्ञानेश्वर भाई (भण्डारा) व आत्म प्रकाश भाई (टोली), दोनों के लौकिक पिता जी थे, जिन्होंने पूरे परिवार सहित 1973 में नागपुर से ज्ञान प्राप्त किया। उसके पश्चात् 1983 में सपरिवार यज्ञ में समर्पित होकर अपनी अथक सेवायें देने लगे। अभी वामन भाई के शरीर की आयु 94 वर्ष थी। आप पाण्डव भवन में रहकर पीछे गेट पर पहरा देते थे। माता जी ने कुछ समय पहले मधुबन में ही शरीर छोड़ा। आपके सभी बच्चे-बच्चियां तथा और भी बड़ा परिवार, सभी समर्पित रूप से अपनी सेवायें दे रहे हैं। आपने 22 जुलाई, 2017 को सवेरे 7.30 बजे, ग्लोबल हॉस्पिटल में अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। आप बाबा के बहुत समीप यज्ञ स्नेही रत्न थे। आपको पूरा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि

प्यारे अव्यक्त बापदादा की अति लाडली व स्नेही, गुडगांव सेवाकेन्द्र की निमित्त मीठी सुदर्शन बहन ने 1959 में ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया और 1965 से ईश्वरीय सेवाओं के लिए स्वयं को यज्ञ में समर्पित किया। साकार बापदादा की, मीठी जगदम्बा माँ की आपने बहुत अच्छी पालना ली। आपने अथक सेवायें देते हुए सेवाओं का बहुत अच्छा विस्तार किया। अनेक आत्माओं को ईश्वरीय पालना देते हुए आप 30 जुलाई, 2017 को अपना पुराना शरीर छोड़ प्यारे बापदादा की गोद में चली गईं। आपके शरीर की आयु 77 वर्ष थी। कुछ समय से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था इसलिए ग्लोबल हॉस्पिटल में ही आपका इलाज चल रहा था। यहाँ ही आपने अपना पुराना शरीर छोड़ा। आपको पूरा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है।

हुबली सबज़ोन से सम्बन्धित जगलूर सेवाकेन्द्र पर अपनी अथक सेवायें देने वाली वरमहालक्ष्मी बहन सन् 1982 में ईश्वरीय ज्ञान में आई और 1990 से समर्पित रूप से अपनी सेवायें दे रही थी। आपने 64 वर्ष की आयु पूरी कर 16 जुलाई, 2017 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। वहाँ ही उनके लौकिक-अलौकिक परिवार ने उन्हें अन्तिम विदाई दी। आपको पूरा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है।

मदद का मीठा अनुभव

ब्रह्माकुमार रामप्रताप सैनी, पिलानी (राजस्थान)

ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय शान्तिवन में मैं तीसरी बार आया था। वापसी गाड़ी का समय रात के 12.30 बजे था। आखिर हमारी ट्रेन आ गयी। डिब्बे में वेटिंग टिकेट वाले यात्री भी चढ़ आए थे। टी.सी.के द्वारा टिकेट चेक होने के बाद वेटिंग टिकेट वाला एक लड़का नीचे की सीट पर झुक कर बैठ गया क्योंकि बीच वाली बर्थ सीधी करने के बाद कोई भी नीचे की सीट पर सीधा नहीं बैठ सकता। मेरी सीट साइड की, ऊपर की थी। मैं सीट पर लेट गया था पर न जाने मुझे नींद क्यों नहीं आ रही थी। न कोई तनाव था, न कोई उलझन पर नींद नहीं आ रही थी।

रात के 2.30 बज गए, अचानक मैंने चादर से बाहर मुँह निकाला और देखा कि लड़का अभी भी झुक कर ही सीट पर बैठा है। उसको देखकर ख्याल आया कि पैसे तो इसने भी दिये हैं पर व्यवस्था के तहत इसे सीट नहीं मिली है। मैं तो सोया हुआ हूँ पर यह तो सीधा भी नहीं बैठ पा रहा है। बाबा कहते हैं, रहमदिल बनो, सहयोगी बनो, मेरे विचारो में उस समय बाबा के यही महावाक्य चल रहे थे। मुझे उस पर रहम आया, मैंने सोचा, इसकी मदद करनी चाहिए। मैंने नीचे झुककर उसके कंधे को छुआ। उसने ऊपर देखा, पूछा, क्या बात है? मैंने कहा, ऊपर आ जाओ। उसने कहा, यह तो आपकी सीट है। मैंने कहा, कोई बात नहीं, हम दोनों काम निकाल लेंगे। मैं घुटने मोड़कर लेट गया और वो भाई आराम से बैठ गया। आपको यकीन नहीं आयेगा, ऐसा करके ज्योंहि मैं मुँह ढक कर लेटा, मुझे गहरी नींद आ गयी। जो नींद मुझे दो घंटे से नहीं आ रही थी, ऐसा करते ही आ गयी। शायद बाबा ने ही मुझे उसकी मदद के लिए जगा रखा था।

सुबह 5 बजे मैं थोड़ा हिला तो उस भाई को मुझ पर रहम आया और बोला, भाई साहब, आप पैर सीधे कर लो और खुद सीट के एकदम किनारे पर बैठ गया। मैंने उसके पीछे

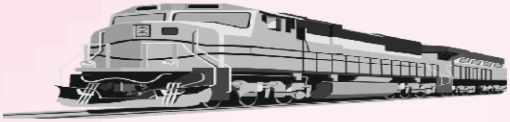

से पैर सीधे कर लिए। फिर मेरे दिल में विचार आया कि मैं तो दो-ढाई घंटे सो लिया, ये तो बैठा ही है, इसको भी लेट कर आराम मिलना चाहिए। मैं तुरन्त सीट से नीचे उतर आया और उससे कहा कि आप लेट जाओ। पहले तो वह संकोच कर रहा था, फिर लेट गया और चैन की नींद सो गया। मैं नीचे की सीट के एक किनारे पर बैठ गया और बाबा को याद करने लगा। चलती गाड़ी में बाबा से 1.30 घण्टे तक बहुत अच्छी रूहरिहान हुई। बाबा ने भी कहा कि बच्चे, आज तुमने बहुत ही अच्छा काम किया है। उस समय बाबा से बातें करके अपने को बहुत ही हल्का महसूस कर रहा था, बहुत प्रफुल्लित हो रहा था। बाबा से बातें करने का इतना मीठा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था। बाबा से बातें करना जारी था।

अचानक उस भाई की आँखें खुली, मुझे बैठा देखकर उसने मुझे हाथ लगाकर कहा, भाई साहब, मेरी वजह से आप परेशान हो रहे हो। मैंने कहा, नहीं, मैं प्यारे बाबा के ध्यान में बैठा हूँ। फिर वो भाई उठकर बैठ गया। ये कैसा अद्भुत नजारा था, वो मेरा ध्यान रख रहा था और मैं उसका ध्यान रख रहा था। कितना मीठा अनुभव उस समय हुआ, उसे मैं बयान नहीं कर सकता। ये सब बाबा की कमाल है! पाठकों से अनुराध करता हूँ कि किसी की मदद करके मीठे अनुभव अवश्य हासिल करें और बाबा का प्यार पाएँ। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1. **शिलाँग :** मेघालय के राज्यपाल महामहिम भ्राता बनवारीलाल पुरोहित को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.नीलम बहन। 2. **चण्डीगढ़ :** हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता कप्तान सिंह सोलंकी को राखी बाँधती हुईब्र.कु. योगिनी बहन। 3. **पणजी :** गोवाके राज्यपाल महामहिम बहन मृदुला सिन्हा को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. शोभा बहन । 4.**जयपुर :** राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधराराजे को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.सुषमा बहन। 5. **पटना :** बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता नीतीश कुमार को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.संगीता बहन। 6.**चेन्नई :** तामिलनाडु के मुख्यमंत्री भ्राता ईडाप्पाडी के.पालानी स्वामी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.बीना बहन। 7.**विजयवाड़ा :** आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता चंद्रबाबू नायडू को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. शान्ता बहन। 8.**अलीराजपुर :** म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को राखीबाँधती हुई ब्र.कु. माधुरी बहन। 9.**जम्मू :** जम्मू-कश्मीरविधानसभा अध्यक्ष भ्राता कवीन्द्र गुप्ता को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.सुदर्शन बहन। 10.**रोपड़ :** पंजाब विधानसभा अध्यक्ष भ्राता के.पी.एस.राना को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.नम्रता बहन। 11.**जयपुर (राजापार्क) :** राजस्थानविधानसभा अध्यक्ष भ्राता कैलाश मेघवाल को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.सन्नुसिया बहन। 12.**बीकानेर :** केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट राज्यमंत्री भ्राता अर्जुनराम को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.कमल बहन।

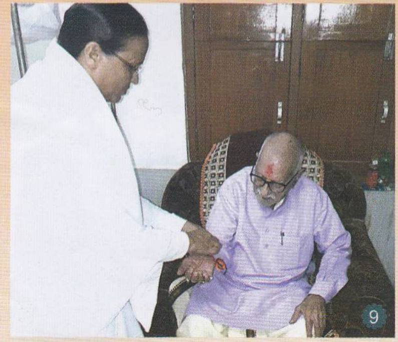

1. शान्तिवन (आबू रोड) : न्यायविद सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता देवेन्द्र कुमार अरोरा, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, म.प्र. उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति भ्राता भगवान दास राठी, ब्र.कु. बी.एल. माहेश्वरी, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. लता बहन तथा अन्य। **2. ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत) :** नौ परिवहन, विमानन तथा पर्यटन सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. निर्मला बहन, ब्र.कु. मीरा बहन, म.प्र. पर्यटन विकास निगम सदस्य भ्राता हीरेन्द्र सिंह शेखावत, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य। **3. लखनऊ :** उ.प्र. के उप-मुख्यमंत्री भ्राता केशव प्रसाद मौर्यको राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. राधा बहन। **4.दिल्ली (स्वास्थ्य विहार) :** दिल्ली के उप-मुख्यमंत्री भ्राता मनीष सिसोदिया को राखी बाँधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु.उर्मिला बहन। **5. पटना (बोरिंग रोड) :** केन्द्रीय कानून तथा न्याय मंत्री भ्राता रविशंकर प्रसाद को राखी बांधती हुई ब्र.कु. अनिता बहन। **6. भुवनेश्वर :** उडीसा के मुख्य मंत्री भ्राता नवीन पटनायक को राखी बांधती हुई ब्र.कु. गीता बहन। **7. नैनीताल :** उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता लोकपाल सिंह को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. वीना बहन । **8. इटारसी :** म.प्र. विधानसभा अध्यक्ष भ्राता सीतासरण शर्मा को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सरिता बहन । **9. बिलासपुर :** छत्तीसगढ़ विधानसभा उपाध्यक्ष भ्राता बद्रीधर दीवान को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सविता बहन । **10. जम्मू :** जम्मू-कश्मीर के व्यापार तथा उद्योग मंत्री भ्राता चन्द्रप्रकाश गंगा को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. निर्मल बहन । **11. दिल्ली (हरिनगर) :** राष्ट्रीय कानून विश्व विद्यालय के उप-कुलपति डॉ. रणबीर सिंह को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. नेहा बहन ।